अंक : जुलाई–दिसम्बर, 25

रजि. नं. 31319/77

ISSN : 2320-0995

राजस्थली

भासा, साहित्य, संस्कृति अर लोक चेतना री राजस्थानी तिमाही

सम्पादक
श्याम महर्षि

प्रबन्ध सम्पादक
रवि पुरोहित

लोकचेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

जुलाई-दिसंबर 2025

बरस : 48-49 अंक : 4-1 पूर्णांक : 168-169

संपादक
श्याम महर्षि

प्रबंध संपादक
रवि पुरोहित

संपादक-मंडल
डॉ. मदन सैनी
डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत'
किरण राजपुरोहित 'नितिला'
मोनिका गौड़

प्रकाशक
मरुभूमि शोध संस्थान
(राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ 331803)

www.rbhpsdungargarh.com
e-mail : rajasthalee@gmail.com

आवरण चित्राम

राजोल राजपुरोहित 'मुक्ता'
नोखा रोड, पुरानी चुंगी चौकी के सामने
भीनासर (बीकानेर)

सैयोग राशि

पांच साल : 1000 रिपिया, आजीवण : 2500 रिपिया, संरक्षक सदस्य : 5100 रिपिया

Phone Pay / Google Pay / Paytm : 9414416252

इण अंक में

व्यंग्य

कुण करसी राजस्थानी लोक-साहित्य री संभाळ — *रवि पुरोहित* — 3

आलेख

ओळखाण रै मारग बैंवती राजस्थानी व्यंग्य विधा — *डॉ. नीरज दइया* — 5

राजस्थानी कहाण्यां : अेक पगफेरो — *जितेन्द्र निर्मोही* — 11

कहाणी

जड़ां सूं जुड़्या पंख — *राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफ़िर'* — 14

निजर अर दीठ — *सत्यदेव संवितेन्द्र* — 21

सौतण — *पन्नालाल कटारिया 'बिठौड़ा'* — 25

गूगल आळी बहू — *रोचिका अरुण शर्मा* — 30

लघुकथा

रामजी करै सो आछो ई करै/ घणी गई थोड़ी रही

सासू रो हीड़ो — *ओम प्रकाश तँवर* — 36

साचो फुठरापो — *ललित शर्मा* — 39

कविता

बगत को पंखो / कविता मीठो मून — *ओम नागर* — 42

सांचै में ढाळ लै / आसा रा फूल

सूखो मरुस्थळ / कूंत — *पुनीत रंगा* — 44

गजल

तीन गजलां — *आशा पाण्डेय ओझा 'आशा'* — 45

गीत

थूं बरस छमाछम जाजे अे / ढोला बेगा आईजै रे — *डॉ. प्रियंका भट्ट* — 48

दोहा

गाजण लागी बादळी — *मंजु शर्मा जांगिड़ 'मनी'* — 49

गद्यगल्प

अेक मजूर री दुरगत / भगतसिंघ : अेक दारसनिक

आम आतमा-खास आतमा — *निशांत* — 51

जातरा संस्मरण

पांवणा — *हरिचरण अहरवाल 'निर्दोष'* — 54

सात समदरां पार, देख्यो धोरां में थार — *भवानीसिंह राठौड़ 'भावुक'* — 57

संपादकीय

कुण करसी राजस्थानी लोक-साहित्य री संभाळ

लोक नै वेद सूं ई ऊंचो मानीज्यो है। शास्त्रां अर वेदां में विरच्योड़ी बात माथै लोग विस्वास करै कै नीं करै, पण लोक में प्रचलित कैबतां अर उक्तियां माथै लोग आंख मींच'र भरोसो करै। संसार रै हरेक प्रदेस रो आपरो लोक है अर उण लोक में प्रचलित साहित्य माथै उण प्रदेस रा लोगां नै घणो गीरबो है। भारतीय भासावां मांय सूं अेक लूंठी अर टकसाळी भासा राजस्थानी रो आपरो सिमरध लोक साहित्य है, जिण माथै जित्तो अंजस करीजै, थोड़ो है। अठै रा लोकसाहित्य में लोकगाथावां, लोककथा, लोकनाट्य, लोकगीत, लोकविस्वास, कहावतां, आडियां अर भरपूर ओखाणां भरपूर है, जिणां नै राजस्थानी लोक आणै-टाणै, ब्यांव-बरतोलियै में बरततो आयो है। सदियां सूं चालती लोक री आ परंपरा आज ई गांव-गवाड़ां में देखण नै मिलै।

अेक बगत हो जद रातै-मातै राजस्थानी लोक-साहित्य रै संरक्षण अर संवर्द्धन सारू राजस्थान में मोकळो काम हुयो, पण लारलै दो दसकां सूं आ बात देखण में आय रैयी है कै लोक री इण थाती री सार-संभाळ रो काम नीं रै बरोबर होय रैयो है। राजस्थानी लोक-साहित्य में वात साहित्य रै पेटै बिसाऊ रा डॉ. मनोहर शर्मा रो काम अंजसजोग रैयो। इणी भांत राजस्थानी लोककथावां रै संकलन अर लेखन रो काम 'राजस्थानी लोककथा कोश' दो भाग रै रूप में चूरू रा गोविंद अग्रवाळ, 'बातां री फुलवाड़ी' रै रूप में विजयदान देथा, 'के रे चकवा बात' अर 'बात में हुंकारो' रै लेखै राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत बिड़दजोग काम करयो। लोक में प्रचलित दूहा रै संकलन संपादन रो काम प्रो. नरोत्तमदास स्वामी 'राजस्थानी दूहा विहार' रै लूंठै संकलन रै रूप में करयो। अठीनै राजस्थानी लोकगीतां रै संकलन अर अैतिहासिक गीतां रै विवेचन सारू डॉ. किरण नाहटा अर राजस्थानी कहावतां रै संकलन में मनोहर सिंह राठौड़ रो काम ई लाखीणो रैयो, जिणां चार भागां में राजस्थानी कहावतां संकलित करी। अबार ई

प्रवासी राजस्थानी कोलकाता रैवासी राजेन्द्र केडिया राजस्थानी कहावतां रै लूंठै दस्तावेज रै रूप में आपरो दूजो भाग प्रकाशित करवायो है, जको अपणै आप में अनूठो अर बेजोड़ काम है। इणसूं पैलां विजयदान देथा भी आठ भागां में राजस्थानी-हिंदी कहावत कोश संकलित संपादित कर चुक्या हा, जिणां में वांरी कहावती कथावां नै जबरो 'रेस्पोंस' मिल्यो। किसी कहावत कियां पड़ी, इणरी संदर्भ कथा देय'र उणां इण संग्रै नै घणो रोचक बणाय दियो है। उणां सूं ई पैली डॉ. मनोहर शर्मा पिलाणी सूं प्रकाशित होवण वाळी पत्रिका 'मरुभारती' में राजस्थानी कहावती कथावां लगोलग छपावता रैया। इण अेकूकी पत्रिका में लगैटगै ढाई सौ राजस्थानी कहावतां री कहाणियां वै प्रकाशित करवाई ही। विजयदान देथा री 'कहावती कथावां' री घणकरी संदर्भ कथावां आं ईज कथावां रो नूंवो अर विस्तारित रूप हो।

राजस्थानी लोक साहित्य रै लेखै सगळां सूं पैलां सरावणजोग काम काळू गांव रा सा. महो. नानूराम संस्कर्ता करयो। उणां राजस्थानी लोकगीत, लोककथावां, लोकनाट्य, लोकगाथावां अर लोकविस्वास माथै अेक व्यवस्थित काम करयो, जको 'राजस्थानी लोक साहित्य' नांव सूं ईज ग्रंथ रै रूप में बोरूंदा री रूपायन संस्था सगळां सूं पैली छपवायो। औ ग्रंथ राजस्थान रा केईक विश्वविद्यालय रै राजस्थानी पाठ्यक्रम रै संदर्भ ग्रंथ रै रूप में विद्यार्थियां रै घणो काम आयो। स्नातकोत्तर स्तर पर राजस्थानी विषय में राजस्थानी लोक साहित्य रै रूप में अेक अलायदो विसय राखीज्यो, जिणमें सफळता हासल करणिया विद्यार्थियां सारू औ ग्रंथ रामबाण सिद्ध हुयो। स्व. संस्कर्ता इणसूं पैली 'खेड़ै रपट' नांव सूं ई अेक संकलन त्यार करयो हो, जिणमें बीकानेर संभाग री भौगोलिक स्थिति, अठै रै जळवायु, खनिज पदार्थ, रूंखड़ा, वनस्पतियां, लोक-संस्कृति, तीज-तिंवार, मेळा-मगरिया, लोकगीत, ख्याल-रम्मतां आद री प्रमाणिक जाणकारी दिरीजी।

अेक बगत हो जद नगरश्री चूरू रो शोध-संस्थान, राजस्थान साहित्य समिति बिसाऊ, हिंदी विश्वभारती परिषद, श्री सार्दूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट, भारतीय विद्यामंदिर शोध प्रतिष्ठान बीकानेर, रूपायन संस्थान बोरूंदा, राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी आद संस्थावां री शोध-पत्रिकावां रै मार्फत राजस्थानी लोक साहित्य माथै मोकळो काम हुयो। आज रै दिन आं मांय सूं घणकरी शोध पत्रिकावां बंद होयगी अर राजस्थानी साहित्य रै सीगै जकी पत्र-पत्रिकावां निकळ रैयी है, उणां में लोक-साहित्य रै विसय में लेख-आलेख देवण सारू संपादकां री ई मनसा ई नीं लागै। घणकरा संपादक आधुनिक राजस्थानी साहित्य माथै ईज आपरो हियाव देय राख्यो है, जदकै जरूरत इण बात री है कै आपां रा बडेरा राजस्थानी लोक साहित्य रै लेखै जको जसजोग काम करग्या, उणनै आपां आगै बधावां। संपादकां रै सागै राजस्थानी रा ऊरमावान शोधार्थियां नै राजस्थानी लोक-साहित्य रै विविध विसयां अर पखां माथै ध्यान देवण री घणी दरकार है।

-रवि पुरोहित

 ISSN : 2320-0995

डॉ. नीरज दइया

ओळखाण रै मारग बैंवती राजस्थानी व्यंग्य विधा

'राजस्थानी व्यंग्य' सूं अठै म्हारो अरथाव राजस्थानी भासा में आजादी पछै थापित नै विकसित गद्य विधा रै रूप—व्यंग्य-साहित्य सूं है। इण विसय रो सगळा सूं लूंठो व्यंग्य औ पण है कै राजस्थानी भासा अर साहित्य की लूंठाई री बात करता थका म्हे हिंदी भासा अर साहित्य नै लारै छोड़ देवणो चावां। अर म्हारी इण चाहत नै जे थे अेक खास कोण नै अरथाव सूं देखसो तो थांनै भरोसो करणो पड़ैला कै खरोखरी में राजस्थानी साहित्य सूं हिंदी साहित्य लारै है। औ कोई व्यंग्य नीं, हकीकत है कै हिंदी साहित्य रो मोटो भवन राजस्थानी साहित्य नै नींव बणायां ऊभो हुयो है। आदिकाल मांय रासो-काव्य पेटै 'पृथ्वीराज रासो' अर बीजी रासो रचनावां मूळ मांय राजस्थानी री है। औ खरो साच कै हिंदी भासा री नींव में राजस्थानी भासा-साहित्य है, तद आपां अठै औ पण कैय सकां कै बरसां पैली राजस्थानी माथै हिंदी नै थापित कर'र लगोलग पोखण रो काम करीज्यो है। इण दीठ सूं अठै किणी भासाई तुलना का मुकाबलै री बात व्यंग्य-विधा बाबत चरचा करता अपरोगी लखावै। राजस्थानी भासा में लिखीज्या व्यंग्य अर अठै रै हालात नै विचारतां थका आपां देखां तो बात ठीक-ठीक हियै ढूकैला। राजस्थानी व्यंग्य री मोटी ओळखाण सद्भावना सूं जुड़ी थकी है, अर जे म्हैं इण विसय रो दायरो कीं बेसी लांबो करूं तो ठा लागैला कै आखै जगत मांय साहित्य की मोटी ओळखाण सद्भावना सूं जुड़ी थकी मानी जावै।

राजस्थान रै लोक साहित्य में सद्भावना पेटै केई-केई बातां दाखला रूप गिणा सकां। अठै आधुनिक साहित्य री व्यंग्य

:: ठिकाणो ::
सी-107, वल्लभ गार्डन
पवनपुरी
बीकानेर- 334003
मो. 8619614360

विधा बाबत बात करण सूं पैली सद्भावना रो अेक दाखलो म्हैं खुद रै बीकानेर (राजस्थान) री थरपणा रो अखरावणो चावूं—

अेक दिन राव जोधा दरबार मांय बिराजै हा, बीकाजी दरबार में कीं मोड़ा पूगा अर प्रणाम करनै आपरै काकोसा कांधल रै कान में कीं होळै-होळै बात करी। आ देख'र राव जोधा व्यंग्य मांय कैयो— ''लागै कै काको-भतीजो किणी गढ नै फतै करण री योजना बणा रैया हो!'' इण बात माथै बीकाजी अर कांधलजी कैयो, ''जे रावळी किरपा रैसी तो पक्कायत औ ई हुसी'' अर उणी बगत काको-भतीजो दोनूं दरबार सूं सीख लेय'र ब्हीर हुयग्या अर पछै दोनूं रळ'र बीकानेर राज की थापना करी।

औ प्रसंग व्यंग्य री ओळखाण पेटै इण ढाळै परोट सकां कै बो सदीव सकारात्मक रूप सूं अंगेजण लायक हुया करै। साथै ई खुद रै लक्ष्य नै पूरण करण रो मकसद लेय'र चालै। राजस्थानी साहित्य, लोक साहित्य अर कविता में व्यंग्य रा घणा-घणा दाखला रैया है, दूजै कानी आपां अठै जिण गद्य विधा री बात करता जिणनै व्यंग्य विधा रूप ओळखण री बात करां, बो होळै-होळै घणो पछै विकसित हुयो।

राजस्थानी व्यंग्य रै पैलड़ै दौर में जठै व्यंग्य विधा रो जलम हुवण री बात आपां करां बठै व्यंग्य अर हास्य दोनूं नै अेक ईज बात विचार'र सिरजण करण वाळा घणा रचनाकार मिलै। डॉ. मदन केवलिया रो मानणो है, ''हास्य अर व्यंग्य दोय न्यारी-न्यारी चीज है, व्यंग्य घणो तीखो हुवै अर सीधो हियै में उतर'र कठैई अटक जावै, औ हियै रै आर-पार कोनी हुवै, मांय अेक कसक छोड जावै।'

डॉ. चेतन स्वामी मुजब, ''व्यंग्य में बात नै टेढी कर'र कैयी जावै, उपदेस अर व्यंग्य में अेक खास फरक औ हुया करै कै उपदेस सीधोसट हुवै, व्यंग्यकार उपदेसी कोनी हुवै, पण दूजी भांत देखां तो बो उपदेसी ई हुया करै।''

राजस्थानी में आधुनिक जुगबोध री अभिव्यक्ति व्यंग्य रै मारफत हुय रैयी है। राजस्थानी ठसक रै साथै इसा व्यंग्य लिखीज्या है, जिकां नै बांच'र गूंगा ई तिलमिलावता कीं बोलण ढूक जावै। व्यंग्य में औ तिलमिलावणो अर बोलणो घणै पछै जलम लेवै। प्रेमजी प्रेम रै 'चमचो' (1973) बाबत नहुष व्यास रो कैवणो है, ''चमचो पैलो हाड़ौती रो हास्य-व्यंग्य संकलन है।'' राजस्थानी में व्यंग्य री जमीन बणावण में डॉ. मनोहर शर्मा रै 'रोहिड़ै रा फूल', श्रीलाल नथमल जोशी रै 'सबड़का', नृसिंह राजपुरोहित रै 'हास्यां हरि मिलै', बुद्धिप्रकाश पारीक रै 'चबड़का' अर मूलचंद प्राणेश रै 'हियै तणा उपाय' रो जसजोग अवदान मानणो चाईजै।

राजस्थानी व्यंग्य रो आदिपुरुष भलां कोई हुयो का नीं हुयो, पण व्यंग्य-रचनावां री पैली पोथी व्यंग्यकार बुलाकी शर्मा री 'कवि, कविता अर घरआळी' (1987) साम्हीं आवै। राजस्थानी अर हिंदी में व्यंग्यकार रूप थापित चावा-ठावा व्यंग्यकार-कहाणीकार

बुलाकी शर्मा रा हिंदी में केई व्यंग्य संग्रै छप्योड़ा है, पण अठै राजस्थानी री बात करां तो 'इज्जत में इजाफो' (2000), 'आपां महान' (2020) अर 'तेरूंडै में किताब' (2022) च्यार व्यंग्य-पोथ्यां है। इण सारू अठै कैवणो पड़ैला कै बांरो इण विधा मांय पक्को अर पुखता पटैसुदा कब्जो हुयोड़ो है।

व्यंग्य विधा री दूजी पोथ्यां री बात करां तो चेतन स्वामी संपादित व्यंग्य-संग्रै 'रचाव' (1991) पैलो संपादित व्यंग्य-संग्रै मान्यो जाय सकै। प्रवासी लेखकां में प्रहलाद श्रीमाळी रै 'आवळ-कावळ' (1991) अर भगवतीप्रसाद चौधरी रै 'सुपनै में चाणक' (1995) पछै राजस्थान रा जाया जलम्या युवा व्यंग्यकार रूप ओळखीज्या लूंठा व्यंग्यकार-कवि शंकरसिंह राजपुरोहित रो नांव आगीवाण है। राजपुरोहित रा 'सुण अरजुण' (1995) अर 'म्रित्यु रासौ' (2017) दोय व्यंग्य-संग्रै इण विधा नै नवी भासा साथै डीघाई दीवी।

सांवर दइया रो व्यंग्य-संग्रै 'इक्कयावन व्यंग्य' (1996) बां रै रामसरण हुयां रै च्यार बरसां पछै साम्हीं आय सक्यो। बां व्यंग्य घणा पैली लिखणा चालू करिया हा, जिका केई-केई पत्र-पत्रिकावां अर संकलनां मांय देख्या जाय सकै। डॉ. नृसिंह राजपुरोहित कैया करता हा, ''सांवर दइया में व्यंग्य करण रो चोखो माद्दो है। चादरै में लपेट'र जूतो मारणो हरेक रै बस रो रोग कोनी।''

प्रवासी लेखकां में श्याम गोइन्का रा तीन संग्रै छप्योड़ा है—'बनड़ां रो सौदागर' (1988), 'लोडी मोडी मथरी' (1994) अर 'गादड़ो बड़ग्यो' (1999)। राजस्थानी भासा रै व्यंग्य-साहित्य बाबत पैली बार हिंदी पत्रिका 'व्यंग्य-यात्रा' रै जनवरी-मार्च, 2010 विशेषांक मांय चरचा करीजी। भारतीय भासावां बिचाळै राजस्थानी व्यंग्य री आ ओळख व्यंग्य रचनावां रै अनुवाद अर आलेखां रै मारफत करीजी—प्रेम जनमेजय, मदन केवलिया, अजय अनुरागी, शरद उपाध्याय, बुलाकी शर्मा, श्याम गोइन्का, नागराज शर्मा आद रो जसजोग योगदान रैयो। इण अंक में शरद उपाध्याय री राजस्थानी व्यंग्य पोथी री समीक्षा विजय जोशी करै अर व्यंग्य खुद री ठावी ठौड़ बणावतो निगै आवै।

राजस्थानी व्यंग्य साहित्य में केई लेखकां लगोलग योगदान कर'र इण विधा नै सिमरध करण रो काम करियो है। बरस 2004 में मदन केवलिया री 'गिनिज बुक सारू' अर नंदकिशोर सोमानी री 'फाईल री आत्मकथा' जिसी पोथ्यां छपी, जिकी राजस्थानी व्यंग्य लेखन री नवी धारा रै रूप में आपां अंगेज सकां। बरस 2005 में नागराज शर्मा री 'धापली रो लोकतंत्र', मनोहरसिंह राठौड़ री 'मूंछां री मरोड़', विनोद सोमानी 'हंस' री 'पांच छंग तीस' अर दुर्गेश री 'उजळा दागी' जैड़ी पोथ्यां इण परंपरा नै आगै बधावै। इणी विगत में हरमन चौहान री 'लखणां रा लाडा' (2006), शरद उपाध्याय री 'चुगली री गुगली' (2007), देवकिशन राजपुरोहित री 'म्हारा व्यंग्य' (2009) अर 'निवण'

(2012) आद पोथ्यां छपी। बरस 2010 में नागराज शर्मा री दूजी व्यंग्य-पोथी 'अेक अदद सुदामा', मंगत बादल री 'भेड़ अर ऊन रो गणित' अर श्याम जांगिड़ री 'म्हारो अध्यक्षता कांड' साम्हीं आवै। श्यामसुंदर भारती री 'कलम अर बंदूक' (2012) अर सुरेंद्र शर्मा री 'म्हूं पिच खोद्यां मानूंगो' (2013) जैड़ी पोथ्यां व्यंग्य नै समकालीनता सूं जोड़ै। बरस 2015 में छगनलाल व्यास री 'पत्नीव्रता' अर छत्र छाजेड़ री 'जे इयां है तो है', बरस 2016 में कैलासदान लालस री 'भला जो देखन मैं चला', बरस 2017 में पूरन शर्मा री 'चस्को राम राज रो', बरस 2020 में राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफिर' री 'सत्त बोल्यां गत' अर दुलाराम सहारण री 'पताळतोड़ हूंस' जिसी पोथ्यां सूं आ विधा पांगरै अर लगोलग सिमरधी कानी चालण ढूकै। इणी जसधारा नै नवी रचनात्मकता सूं पोखण रो काम दूजा व्यंग्य-संग्रै ई करै, जियां—पवन पहाड़िया रो 'छींक, छेती अर छींकी' (2023), रामरतन लटियाल रो 'कुण छोटो कुण मोटो' अर रामजीलाल घोड़ेला रो 'जुगाड़' आद। बात किणी पण विधा में लगोलग सिरजण अर नवै-नवै सिरजकां रा करिया प्रयोग कैय सकां। नवां विसाय, नवी भासा अर नवी बुणगट सूं व्यंग्य विधा राती-माती हुयां ई भारतीय साहित्य मांय राजस्थानी री ओळखाण मांय बधापो हुवैला। आं व्यंग्य लेखकां भेळै भगवतीलाल व्यास, त्रिलोक गोयल, रामकुमार ओझा 'बुद्धिजीवी', प्रहलाद श्रीमाली, गोपाल राजगोपल, सुखदेव राव अर शिवराज छंगाणी जिसा केई-केई दूजा नांव भळै है जिका व्यंग्य लेखन नै विविधता अर डीघाई मांय इजाफो करण नै कलम चलाई।

आ पण हरख री बात है कै कृष्णकुमार 'आशु' रो राजस्थानी में पैलो व्यंग्य उपन्यास 'ब्याधि उच्छव' साम्हीं आयो अर बां प्रेम जनमेजय रै हिंदी व्यंग्य-संग्रै 'हँसो हँसो यार हँसो' रो राजस्थानी अनुसिरजण ई करियो। अठै व्यंग्यकार बुलाकी शर्मा नै घणा रंग कै बां हरिशंकर परसाई रै साहित्य अकादेमी सूं आदरीजी पोथी 'विकलांग श्रद्धा का दौर' रो राजस्थानी अनुसिरजण करियो। आस करां कै दीनदयाल शर्मा अर ओम नागर आद दूजा-दूजा लेखकां री ई व्यंग्य पोथ्यां बेगी ई छपैला।

राजस्थानी व्यंग्य-साहित्य नै लोकप्रिय बणावण अर ओळखाण सूंपण मांय न्यारी-न्यारी पत्र-पत्रिकावां री जसजोग भूमिका रैयी है। दैनिक 'युगपक्ष' में आयै मंगळवार नै छपण वाळै मायड़ भाषा परिशिष्ट री बात करां कै 'बिणजारो' अर 'माणक' जैड़ी पत्रिकावां री जिकी लगोलग व्यंग्य-रचनावां नै ठावी ठौड़ देय'र इण विधा नै पांगरण रा मोकळा मौका दिया है। इणी ढाळै 'जागती जोत', 'राजस्थली', 'मरवण' जैड़ी पत्रिकावां में ई व्यंग्य लगोलग छपता रैया। अठै उल्लेखजोग बात आ पण है कै बहुभाषी पत्रिका 'हास्य-व्यंग्यम्' में ई राजस्थानी व्यंग्य नै लगोगल ठौड़ मिल रैयी है।

राजस्थान सूं बारै ई राजस्थानी व्यंग्य री जसजोग हाजरी देखण नै मिलै। महाराष्ट्र रै मुंबई सूं छपणियै छापै 'सामना' मांय लगटगै दो-ढाई बरसां सूं लगोलग 'रौबीलो राजस्थान' सिरैनांव सूं ख्यातनांव व्यंग्यकार बुलाकी शर्मा रो हफ्ताऊ कॉलम आपां देख रैया हां। औ इण बात तो पुख्ता प्रमाण है कै प्रवासी राजस्थानियां में ई खुद री मातभासा अर व्यंग्य साहित्य पेटै घणो जुड़ाव अर लगाव बण्यो है।

आखी बातां माथै गंभीरता सूं विचार करियां ठा लागसी कै व्यंग्य विधा फगत किणी बखाण का आलोचना री भरपाई कोनी करै, अठै साहित्य रै सीगै ऊंडा सामाजिक सरोकार-जथारथ नै साम्हीं लावण रो आ विधा अेक जरियो बण'र आपां साम्हीं आवै। इणरी ओळखाण सामाजिक विसंगतियां री ओळख कर'र उणनै अेक मनभावन बुणगट मांय साम्हीं लाय नै बांचणियां नै सहज रूप सूं असहज करण मांय समझी जाय सकै। काळजै नै जिकी विधा हाथ घाल सकै बा व्यंग्य बणती जाय रैयी है। व्यंग्य रो मूळ मकसद अबै फगत मनोरंजन नीं, बो सामाजिक चेतना रो विकास करै। जद रचना बांचणिया नै बां रै बगत, समाज अर खुद री भूमिका माथै विचार करण नै बेबस कर देवै तद कैय सकां कै अेक खरै व्यंग्य अर व्यंग्य लेखक री सफळता है।

अेक असरदार व्यंग्य बांचणियां नै फगत आकळ-बाकळ ई कोनी करै, बो उणनै सोचण-समझण अर आत्मचिंतन री औसथा मांय लेय जावै। आ बात रचना रै मांयला-बारला घटणा बणाव अर लेखकीय चतराई सूं घड़ी जावै, जिणसूं मांयलै साच तांई किणी पण बांचणियै नै रचना लेय'र जावै। लेखक री दीठ बो जिकी बात कैवै उण मांय विवेकवान अर आखै समाज खातर हुवणी चाईजै। उणनै किणी खास मिनख-समाज कै किणी पण फगत घटना नै आपरो उद्देस्य बणावण री ठौड़ आखै सामाजिक जथारथ री आलोचना करण मांय लागणो चाईजै। अठै औ पण उल्लेखजोग है कै व्यंग्य में भासा री गरिमा अर अभिव्यक्ति री सौम्यता-सालीनता बणी रैवणी चाईजै। उणमें मौलिकता, रचनात्मकता अर कीं नवो हुयां ई बा प्रभाव बणा सकै, आ समझण री बात है।

सेवट में, व्यंग्य री ओळखाण समाज रै मांय घर करियोड़ी विडंबनावां, विरोधाभासां अर अन्याव नै उजागर करण पेटै है। अेक सांवठो व्यंग्य बांचणियां नै किणी कांठै सूं खींच'र गैरै पाणी मांय लेय'र डुबावण मांय समझी जावै, जठै पूग्यां बो फगत जथारथ नै ओळखै ई नीं, खुद ई उण गत मांय ऊभो हुय जावै—औ लखाव ई व्यंग्य री सफळता मानीजै। खरोखरी बात तो आ है कै राजस्थानी भासा रा केई रचनाकारां बिचाळै आज कीं रचनाकार इसा पण है जिका मूळ रूप सूं हिंदी रा व्यंग्यकार है, पण बै राजस्थानी में कीं चाबो-भुरको देख'र अठै आय ढूक्या है। बांनै भासा री गरिमा बणावण मांय घणी

समझदारी सूं लेखन करणो पड़ैला, लेखण नीं। किणी पण भासा मांय लिखण सूं पैली जरूरी है उण भासा नै जाणनो।

व्यंग्य री ओळखाण सारू घणी जरूरी बात है कै आलोचना हुवणी चाईजै जिणसूं व्यंग्य नै दिसा अर दीठ मिलै। आलोचना में शास्त्रीय व्याख्या अर देस-विदेस रा लूंठा मोटा दाखला री ठौड़ आपां राजस्थानी में हुयै काम नै देखसां तो ठा लागसी कै राजस्थानी व्यंग्यकारां मांय ग्रामीण अर कस्बाई परिवेस रै आसै-पासै री अबखायां अर अंतर्विरोध नै बिचाळै राखता थकां ई व्यंग्य-दीठ रो विगसाव हुयो है। अठै विसयगत विविधता है- शिक्षा व्यवस्था, भ्रष्टाचार, सामाजिक दिखावो, जातीय जकड़न, राजनीति री नाटकीयता अर आं सगळां माथै अेक गैरी, भोग्योड़ै जथारथ भेळै आलोचनात्मक दीठ साथै आडी-टेढी ओळ'ां कथीजी है।

राजस्थानी व्यंग्य में हास्य अबै गौण हुयग्यो है अर हळकै-फुळकै टीका-टिप्पणी री ठौड़ व्यंग्यकार सीधो भिड़ंत मांडतो निगै आवै। व्यंग्यकार री दीठ तटस्थ, संवेदनशील अर विचारसील है, जिकी फगत चूंटिया ई कोनी बोड़ै, बो समाज नै आरसी पण देखावण रो काम करै। इस विधा में भासा री व्यंजनात्मकता, मुहावरां री तीखी-तेज भासा-सैली बोलचाल वाळी जीवंतता साथै उणनै घणी प्रभावी बणावण ढूकी है। इण ढाळै राजस्थानी व्यंग्य अेक इसी विधा बण'र साम्हीं आवै जिकी फगत स्थानीयता नै अभिव्यक्त कोनी करै, बा वैश्विक व्यंग्य री परंपरा में ई आपरी ठौड़ बणावण री खेचळ चालू कर दीवी है। आ विधा जनभासा में जनचिंतन री सांवठी जबान है, जिकी फगत कोरी-मोरी बांचण मांय ई नीं आवै, आ समझण अर हियै रा अणमोल लखावां मांय ई सामल हुंवती जाय रैयी है। औ बदळाव रो फगत आगाज है, अंजाम अजै बाकी।

◆◆

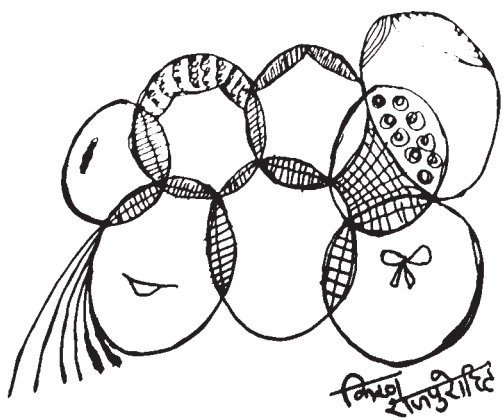

जितेन्द्र निर्मोही

राजस्थानी कहाण्यां : अेक पगफेरो

बात कहाणी की करां तो राजस्थानी कहाणी परंपरा हिन्दी कथा विकास परंपरा सूं अलग कोई नै वा सीधी ई सूं जुड़ी हुई लागै छै। संदी कहाण्यां लोककथा परंपरा सूं आई छै। कोई नै कहाणी कही कोई नै सुणी। जीं आदमी नै कहाणी जीं झझका सूं सुणाई अर लोग भेळा होयग्या, वा क्हबा की चतराई ई शिल्प होग्यो। ऊंनै म्हां लिपि में ल्यां तो भासा लिखबा की चतराई शिल्प मान सकां छां। म्हांका लोक में न्याळा-न्याळा संदर्भ छै। जी सूं क्ह सकां छां लोक घणो सांवठो छै।

हिंदी साहित्य में पैली कथा 'रानी केतकी की कहानी' छै। जीं कै तांई रामचंद्र शुक्ल 1788 सूं 1803 के बीच की बतावै छै। ईं लेखै म्हा हिंदी कथा को विकास काल सन् 1800 सूं मान सकां छां। राजस्थानी कहाणी की सरुआत 'विश्रांत प्रवासी' सूं मानी जावै छै, जीं का लेखक शिवचंद्र भरतिया छै। राजस्थानी भासा में सरुआती कथाकार शिवचंद्र भरतिया, भगवती प्रसाद दारूका, पं माधव प्रसाद दारूका, पं. माधव प्रसाद मिश्र, शिवनारायण तोषनीवाल, गुलाबचंद्र नागौरी आद छै। डॉ. किरण नाहटा क्है छै कै प्रवासी रचनाकार कथा परपंरा नै आगै न बधा सक्या, ईं को कारण राजस्थानी लिखारा सूं सैयोग न मलबो छो। गुलाबचंद्र नागौरी की कहाण्यां 'बड़ी तीज', 'बेटी री बिकरी', 'बहू की खरीद' अर शिवनारायण तोषनीवाल की 'विद्या परिदेवतम्', 'स्त्री शिक्षण को ओनामो' का तकरीबन 20 बरस बाद 1935 के ओळै-दोळै कहाण्यां को अेक जुग आयो। यां कहाण्यां लिखबा हाळां में आगीवाण नांव मुरलीधर व्यास को छो। यां का काळखंड

:: ठिकाणो ::
बी-422, आर.के.पुरम
कोटा-324010
मो. 9413007724

में ई नानूराम संस्कर्ता, नृसिंह राजपुरोहित, श्रीलाल नथमल जोशी, अन्नाराम सुदामा, दामोदर शर्मा, बैजनाथ पंवार, करणीदान बारहठ, रामेश्वरदयाल श्रीमाली, मूलचंद्र प्राणेश, दीनदयाल ओझा छा। यो काळ 1935 सूं 1965 तांई को रह्यो जीं कै लेखै डॉ. अर्जुनदेव चारण क्है छै, ''यो काळ हूंस बधावण जस्या न रह्यो।''

विद्वान राजस्थानी कथा जगत में बदळाव सन् 1970 कै बाद दिखै छै, जद भासा अर शिल्प में बदळाव भी देखबा में मलै छै। यां कहाणीकारां में सांवर दइया, रामस्वरूप परेस, मनोहर सिंह राठौड़, बी.एल. माली 'अशांत', नंद भारद्वाज, हरमन चैहान आद छै। डॉ. अर्जुनदेव चारण भी क्है छै, ''आधुनिक राजस्थानी कहाणी लोककथावां रै दबाव सूं जठै मुगत होवती लागै ऊं काळ 1972-74 रो है।''

डॉ. नीरज दइया राजस्थान कहाणी कै काळ कै तांई कृति 'बिना हासलपाई' का मुजब सूं पंद्रा पंद्रा साल का काळखंड में बांटै छै—

1.बरस 1956 सूं 1970

2.बरस 1970 सूं 1985

3.बरस 1985 सूं 2000

4.बरस 2000 सूं आज तांई

प्रो. कुंदन माली की कृति 'समदीठ' के मुजब राजस्थानी कहाणी काळखंड तीन भागा में यूं बांटै छै—

1.1956 सूं 1976

2.1976 सूं 1997

3.1998 सूं 2007

श्याम जांगिड़ को क्हबो छै, ''काळखंड कै तांई अस्या बांटबो चाईजै कै लेखक का रचाव की लारां-लारां परंपरा को विकास भी हो।''

प्रो. कुंदन माली को क्हबो छै, ''उत्तर आधुनिक काळ में जद आदर्शवादी बातां टेम कै अनुसार बरताव में न री तो उत्तर आधुनिक राजस्थानी कहाणी यर्थाथवाद की आड़ी ऊंडाई सूं साम्हीं आई।''

आज उत्तर आधुनिक काळ की बातां करां तो पाछला दनां सुस्त चालती ये कहाण्यां रवानी पै छै। बीकानेर संभाग में ई की रवानी को न्याळो रूप देख्यो जा सकै छै। ई लेखै बीकानेर संभाग कहाणी को सरताज केंद्र कह्यो जा सकै छै। बीकानेर, हनुमानगढ़, गंगानगर में जाणै राजस्थानी कहाणी की खेती होवै छै। डॉ. भरत ओळा, डॉ. सत्यनारायण सोनी, रामस्वरूप किसान, मेहर चंद धामू, रूपसिंह राजपुरी, डॉ. कुष्णकुमार 'आशु', राजू सारसर 'राज', पूरण शर्मा 'पूरण', मनोज स्वामी, कीर्ति शर्मा, मधु आचार्य 'आशावादी', डॉ. मदन सैनी, राजेन्द्र जोशी, मनीषा आर्य, डॉ. रेणुका व्यास 'नीलम', डॉ. सीमा भाटी, प्रमोद शर्मा, नवनीत पाण्डेय, हरिमोहन सारस्वत 'रूंख', डॉ. मदन गोपाल लढ़ा आद

नांव उल्लेख जोग छै। डॉ. भरत ओळा अर मधु आचार्य को नांव युगीन कथावां मांडबा में लियो जा सकै छै। यां का नांव समकालीन राजस्थानी कथावां नै आगै बधाबा में भी लियो जा सकै छै।

शेखावटी अंचल में श्याम जांगिड़, राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफिर', किशोर निर्माण, उम्मेद धनियां, उम्मेद गोठवाळ, दुलाराम सहारण, कुमार अजय, भंवरलाल भवंरियो आद उल्लेखजोग छै। थोड़ा घणा नावां सूं दलित-विमर्श का पानां भी बारै खडै छै। यां में शिव बोधि, बी.एल.पारस, सतीश सम्यक आद का नांव उल्लेखजोग छै।

मारवाड़ में मनोहर सिंह राठौड़, रामेश्वरदयाल श्रीमाली, मीठेश निरमोही, पुष्पलता कश्यप, बसंती पंवार, जेबा रशीद, संतोष चैधरी, किरण राजपुरोहित 'नितिला' आद का नांव गिणावण जोग छै। संतोष चैधारी अर किरण राजपुरोहित 'नितिला' महिला कथा लेखन कै लेखै आधुनिक जुग का पाना मांडै छै। यां दोन्यूं नै महिला विमर्स ईं ले'र समकालीन कथा का नूंवा पाना मांड द्या छै।

अजमेर में डॉ. सी.पी. देवल तो छै ई, उमेश चैरसिया, विनोद सोमानी 'हंस' आद भी जाण्या-पछाण्या नांव छै। डॉ. सी.पी. देवल जुग बदळाव का लोंठा कथाकार छै। नंद भारद्वाज की दीठ कथा जगत में न्याळी छै। लोक अर आजादी का नायक प्रकृति की लार-लार वांका कथा-संदर्भ में नजर आ जावै छै।

हाड़ौती अंचळ का कथा जगत में डॉ. शांति भारद्वाज राकेश, कमला कमलेश, गिरधारी लाल मालव कथाक्षेत्र में नाम कमाग्या। ईं टैम अतुल कनक, जितेन्द्र निर्मोही, विजय जोशी, जगदीश भारती लगोलग मांड रया छै। डॉ. आईदान सिंह भाटी आद विद्वान कहै छै कै अतुल कनक अर जितेन्द्र निर्मोही राजस्थानी कथा को नूंवो शिलप अर नूंवो कथ्य साम्हीं लारया छै।

मेवाड़ में अरविंद सिंह आशिया, माधव नागदा, रीना मेनारिया, डॉ. अनुश्री राठौड़, विद्या मेनारिया आद नांव उल्लेखकरण जोग छै।

बागड़ी में भी दिनेश पांचाल की लारां नूंवी पौध साम्हीं आरी छै। प्रो. कुंदन माली कै मुजब अब सेक्स की बात करबो राजस्थानी कहाणी में दूरां की बात न री। जुग बदळाव की लारां आधुनिक राजस्थानी कहाणी साम्हीं आ'री छै। किट्टी पारटी, दारू पारटी, देसाटण, वैश्वीकरण, लिविंग रिलेशनशिप, कंप्यूटर, टेबलेट आज की कहाणी में दिखाई दे छै। फेर भी लागै छै कै आज की कहाणी नै नूंवा जुगबोध की जरूरत छै। नूंवा जमाना सूं सीख लेय रैयी ये कहाण्यां साम्हीं आवैगी ई। कुल मला'र आज को राजस्थानी कथा जगत सांतरो भी छै अर सांवठो भी छै। वर्तमान कथा जगत पे घणी चरचा करी जा सकै छै।

◆◆

राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफ़िर'

जड़ां सूं जुड़्या पंख

संदीप अर पूनम री उमर में घणो फासलो कोनी हो। दोनूं सायना ई मानो। सगाई री बात चाली तद केई दिनां ताणी संदीप रै मां-बाप रै गळदाईं रैयी कै छोरै सूं छोरी दो महीना बडी है। अैड़ी दोघाचींत संदीप रै तो जाबक ई कोनी ही। वो तो पैलपोत ई कैय दीन्हो कै जे लुगाई उमर में बडी हुवै तो के आंट है। मोट्यार-लुगाई बरोबर ई मान्या जावै, उमर सूं बेसी फरक कोनी पड़ै। आजकलै टाबर ब्यांव री हामळ ई कद भरै! भणाई-लिखाई अर सरकारी नौकरी खातर परीक्षावां देय'र थाक जावै, तद नींठासीक। त्यारी करतां थकां संदीप रै सरकारी नौकरी रो संजोग बण्यौ ई कोनी। आईज बात पूनम साथै ही। छोरियां ई करियर री चिंत्या-फिकर में आधी हुय जावै। ई खातर माईत मानग्या। संदीप तो कुल मिलाय'र रूप-रंग अर फेसकट माथै लट्टू हुयग्यो। बत्तीस बरस री पूनम रो गोरो रंग। नांव मुजब पुन्यूं रै चांद-सो उणियारो। लांबा केश, तीखी नाक, मोटी आंख्यां, ओपती हाइट। दोनूं बरोबर ऊभा हुवै तो संदीप रै कानां तक आवती ऊंचाई। इसी कन्या सूं ब्यांव कुण कोनी करणो चावैगो? छेकड़ दोन्यां रो ब्यांव हुयग्यो।

पूनम जयपुर रै सांकड़ै ई पुस्तैनी गांव में पळी-बढी। रूप-रंग री जित्ती फूठरी, वीं सूं बेसी वींरा संस्कार सरावणजोग हा। अेक-दो बरस में ई मिनख री मोटा-मोटी परख तो हुय जावै। पूनम री परख ई हुयगी। वा सासरै में चोखी तरियां सैट हुयगी। मां-बाप, दादा-दादी रै संस्कारां में पळी-बधी। अचंभै री बात तो आ ही कै पूनम रै ईं जुग रो खास फटकारो कोनी लाग्यो। इयां मानल्यो कै वा आपरी जिनगानी में परंपरावां अर परवारू मोल नै

:: ठिकाणो ::
सावित्री सदन
सी-122, अग्रसेन नगर
चूरू (राज.) 331001
मो. 9414350848

 ISSN : 2320-0995

सिरै राख्या। मिल्यो जकै खातर कदे नीं तो संदीप नै ओळमा दिया, नीं सासू-सुसरा नै। ईं कळजुग में अैड़ी बीनणी माथै सगळा अचंभो करता। ठा नीं कुणसी स्कूल री भणाई वींनै सुंवारी? मोटी बात आ कै देखादेखी रै ईं जुग में वींनै संदीप री तनखा माथै संतोस हो।

ब्यांव पछै दो बरसां में पूनम सगळो घर सांभ लीन्हो। बहुरास्ट्रीय कंपनी में संदीप रो काम ऑडिट पार्टी रै साथै जावण रो रैंवतो। महीनै में दस-बारह दिन तो जयपुर सूं बारै ई रैवणो पड़तो। परिवार री गाडी पटड़ी माथै सौराई सूं चालै ही। चाणचकै ई गाडी रै इंजन में खराबी आयगी। अेक दिन ड्यूटी री वेळा संदीप रै हार्ट रो दरद आयो। ऑफिस वाळा अस्पताळ लेयग्या। अस्पताळ में भरती हुयां पछै सत्तर भांत री अबखायां साम्हीं आवै। ब्लॉकेज बतावता थकां डागदर तुरत-फुरत ई दो स्टेंट घाल दीन्हा। केई दिनां रै बेड-रैस्ट री भोळावण न्यारी दीन्ही। प्राइवेट नौकरी में रेस्ट कठै मिलै? नौकरी छूटगी। जमा-पूंजी इलाज में लागगी। माईतां रै सिर माथै हाथ हुवतां थकां ई संदीप अर पूनम रै टेंसन रो ठिकाणो नीं रैयो। ...मोट्यार हुयां पछै टाबर माईतां नै स्हारो देवै कै वां सूं स्हारो लेवै? खरचा तो बियां ई लागता रैयसी। ठा नीं कद संदीप री नौकरी लागै? आं सवालां अर अबखायां साथै पूनम नौकरी करण रो मत्तो करयो। अेकर तो संदीप रा मम्मी पापा बरजा-बरजी कीन्ही, पछै हामळ भर दीन्ही।

संदीप सूं बूझादाझी अर रजामंदी करयां पछै पूनम नौकरी खातर भाजादौड़ी करती रैयी। कमती तिनखा मिल जावै, पण संदीप सूं आंतरै रैय'र नौकरी करणी वींनै मंजूर कोनी ही। भाजादौड़ में जूत्यां घसगी, पण सौरै सांस नौकरी कठै मिलै? छेकड़ संदीप रै सागड़दी री सिफारस सूं अेक बैंक सूं जुड़ी इंश्योरेंस कंपनी में नौकरी मिली। इंश्योरेंस करण रो टारगेट बेस्ड काम मिल्यो। संदीप नै ठा हो कै अैड़ी नौकरी घणी दौरी हुवै। आठूं पोहर टारगेट रो अणूतो दाब। मंगता दांई प्लान बतावता रैवो। कस्टमर रै ऊकचूक सवालां रा उथळा धीजै सूं दयो, लिलाड़ माथै सळ नीं आवै...। कंपनी में लगैटगै बीस रो स्टाफ जकै में छोरियां बेसी ही। कोरपोरेट जगत री मानता है कै आदमियां री बनिस्पत लुगायां नै केस बेसी मिलै।

पूनम रोजीना सिर मांय तेल, लिलाड़-बिंदी, हाथां में चूड़ियां, धोती पैहरयोड़ी ऑफिस पूगै। वींरी बोलचाल सूं औ साव निगै आवै हो कै वा अेक सीधी-सादी घरू लुगाई है। ऑफिस में घणकरी छोरियां टॉप-जींस में आवै। वांरा लटका-झटका अर बोलण में बीच-बिचाळै अंगरेजी रा सबदां रो ठरको! अेक जणी तो ओलै-छांनै सिगरेट रा सूट लेवण में ई हुंस्यार ही। वींनै देखतां पूनम रै आ समझ कोनी पड़ै कै वा छोरी ओलै-छानै कठै जाय'र औ धुंवो उडावै?

वींरो नांव स्नेहा हो, लगैटगै अट्ठाइस बरस री कुंवारी! वा केई अैलकारां सूं ऊंचै ओहदै माथै ही। ठा पड़्यो कै स्नेहा महानगर मांय पळी-बढी अर घणी पढी-लिखी छोरी ही। पूनम नै वींरी बातां सूं नेहचो हुयो कै वा आपरै विचारां में स्वतंत्रता नै सिरै राखै। वा आपरी स्वतंत्रता, आतमनिर्भरता अर खुली चिंत-चितार वास्तै जाणीजै। स्नेहा कैया करै कै हरेक लुगाई नै आपरी मरजी मुजब खावण-पीवण, पैरण-ओढण रो अधिकार है। आदमी-लुगाई रा अधिकार, बरोबर मतलब जाबक बरोबर...। लुगाई जद रोट्यां बणा सकै, गाभा-लत्ता धो सकै तो आदमी क्यूं नीं!

दो-तीन दिन तो ऑफिस रो सांग देख'र पूनम सैंगमैंग-सी रैयी। वीं खातर अपरोघी बात आ ही कै आपसरी में सगळा, नांव साथै जीकारौ कोनी देवै। मैनेजर नै ई सीधो नांव सूं बतळावै। सीधासट्ट पूनम, कीर्ति, लता, विहान, अखिल... बोलता कोनी सकै, पूनम नै अचंभो हुंवतो। पण ईं ऑफिस में औ ओछापण कोनी बाजै। जियां-जियां आपसरी ओळखाण अर बतळावण हुवती गई, पूनम रो जीव कीं जमतो गयो। वा पांच-सात दिनां में आपरो काम सीख लीन्हो।

पूनम नै आपरो काम घणो चोखो लागतो, पण वठै काम करती छोरियां-लुगायां रो मैकअप अर पैरवेस साम्हीं पूनम अछूत दांई ही। लुगाई तो लुगाई हुवै... कदे वींरो ई मन करतो कै जीवड़ा आपां ई नूंवो बेस पैर'र देखां...। वा घरै जाय'र ड्रेसिंग-टेबल साम्हीं संदीप री टी-शर्ट अर पेंट घाल'र खुद नै देखती, पण वींनै खुद नै ई इस्यो पैरवेस अणसुहावतो लाग्यो। छेकड़ वा जीव जमा लीन्हो। खुद रै पैरवेस पेटै वीं में कदैई हीणभाव कोनी आया। वा खुद सूं सवाल करती, ''म्हैं जियां हूं, बियां सावळ कोनी के?'' मांय सूं उथळो आवतो, ''हां पूनम, थूं थारै मूळ सूं परै मत हट।'' ... दूजां री जियां मरजी हुवै बियां पैरौ-ओढो नीं! कुण बरजै? वांरा माइत जे बरजता ई हुवै तो कुण जाणै?

स्नेहा रो विभाग बदळग्यो अर वा पूनम री टीम री मैनेजर बणगी। स्नेहा पैलपोत री भेंटळ में ई पूनम री सादगी अर लुळताळु सुभाव नै समझगी। वा चितारती, पूनम मांय जबरी खिमता है, पण वा आपरै आतमविस्वास नै साम्हीं लावण सूं डरै। पूनम री खिमता परंपरागत सोच तळै दब्योड़ी है। वा खुल'र बात कोनी कर सकै। स्नेहा री दीठ तो अेक ठौड़ ई टिक्योड़ी रैवती; कोरपोरेट जगत री रीत तो निरवाळी हुवै।

अेक दिन स्नेहा पूनम नै आपरै केबिन मांय बुलायी।

''पूनम, थारी परफोरमेंस आछी है, पण आ और ई आछी होय सकै। थनै कीं बदळाव करणा चाईजै। जियां, थूं कदे ड्रैस अर खुद रै रख-रखाव पेटै विचार कर्‌यो है के?'' स्नेहा मुळकती थकी सवाल कर्‌यो।

पूनम आतमविस्वास सूं उथळो दीन्हो, ''मैडम, म्हैं तो बस म्हारो काम करूं। जका इंश्योरेंस प्लान है वांनै सावळ समझा देऊं। म्हारी समझ में तो ईं काम में पैरवेस

कठैई आडै कोनी आवै। म्हैं तो बरसां सूं औ ईज पैरवेस देखती आई हूं। दूजी बात आ कै कंपनी री खास युनिफार्म तो है कोनी।''

स्नेहा मुळकती थकी बोली, ''थारै पैरवेस में कोई बुराई कोनी, पण केई दफा दूजां नै इंप्रैस करण खातर ई खुद नै थोड़ो बदळणो पड़ै। धोती टाळ दूजी पोसाक सूं थारो आतमविस्वास ई चैगणो हुय जासी।''

पूनम समझगी कै स्नेहा वींरै परंपरावादी पोसाक अर वैवार नै बदळणो चावै। वा चावै कै पूनम ई टॉप-जींस में ऑफिस आवै। पूनम नै बदळण खातर स्नेहा करड़ाई सूं तो कोनी बोली। मजबूर ई कोनी करी, पण वा दूजा नैं फगत खुद री निजर सूं ई तोलै ही। स्नेहा ओजूं पूनम रै दोघाचींत घाल दीन्ही। पूनम खातर स्नेहा बणनो जाबक ई ओखो हुयग्यो! च्यार महीना निसरग्या। पूनम खुद मांय कीं बदळाव कर्‌यो कोनी। आपरै काम सूं काम राखती। ऊजळी रामरूमी, नीं गपसप करणी अर नीं चुगली-चाळा। इस्सी लुगाई सूं कुण घणी भायलाचारी राखै! पण बैर ई किणी सूं कोनी हो।

अेक दिन कंपनी रै हैड ऑफिस कानी सूं बडी सेमिनार रो कागद आयो। सेमिनार रो इंतजाम ईं ब्रांच नै ई करणो हो। मैनेजर सूं कागद लेय'र स्नेहा आपरी टीम रै सगळां नै बतायो कै आप-आपरी त्यारी में लाग जावो। सगळां नै खुद री परफोरमेंस खातर बूझ्यो जावैगो। बडा अफसर सवाल करै तो वींरो पड्‌त्तर त्यार हुवणो चाईजै। सुस्ती कतई कोनी चालैगी। खुद नै ई सजा-संवारनै आवणो है।

पूनम पैली री भांत आतमविस्वास सूं लागी रैयी। वा मनोमन ई चितारती कै नूंवो के करणो है! चमचागिरी तो सगळै चालै ई है, पण मिनख रो काम ई अवसकर बोलै। प्राइवेट कंपनियां में अैलकारां री परफोरमेंस रो रिकार्ड ऊपर ताणी पूगै। वा ईं पेटै घरां संदीप सूं ई बात करती रैयी। संदीप तो वींनै आपरी पोसाक ऑफिस मुजब करण री सल्ला दीन्ही। वो बोल्यो, ''स्नेहा ईं पेटै गळत तो कोनी। आजकलै कोरपोरेट जगत में पैरवेस ई आपरी जग्यां घणो मायनो राखै। जियां म्हां लोगां में जका टाई बांधै वै बेसी स्मार्ट मानीजै। मतळब खुद रै गळै में खुद ई फंदो घालो। पूनम! सरकारी दफ्तरां में तो कियां ई आओ-जाओ कोई मतळब कोनी, पण थारला जैड़ा दफ्तरां रो सांग न्यारो ई हुवै।''

पूनम हांसती थकी बोली, ''जे म्हैं जींस-टॉप कै पेंट-शर्ट पैरूं तो मां-पिताजी के सोचेगा? वै आईज कैवैगा कै बीनणी रै जमानै री हवा लागगी। पंख लागग्या। आज गाभा आथूण रा है, कालै और कीं अंगेजसी! जे म्हैं नूंवी ढाळ गाभा घाल ई ल्यूं तो म्हैं मांय सूं तो बदळ कोनी सकूंगी। म्हैं सैज कोनी रैय सकूं। म्हनैं तो धोतीसूं चोखो कीं कोनीं लागै। घणी करो तो सलवार-सूट, बस्स! म्हैं तो तै कर लियो कै कीं बदळाव नीं करूंगी। देखी जासी, जकी हुसी। कोई गांवई-गंवार मानै तो मानतो फिरै।''

दिन निसरता ठा ई कोनी पड़्यो। सागी दिन आयग्यो। स्हैर रै नामी होटल रै हॉल में सेमिनार तेवड़ीजी। स्टेज जोरदार सजायेड़ो हो। पांच फेंसी कुरस्यां साम्हीं मोटा अफसरां रै नांव री प्लेट लाग्योड़ी। अेक कानी भांत-भंतीलै फूलां रा बुका अर माळावां धरयोड़ी। हॉल रै बारै स्नैक्स अर चाय-कॉफी रा काउंटर लाग्योड़ा। हॉल मांयली सीलिंग लाइटां सूं सोभा चौगणी हुयगी। आज अठै स्हैर री च्यार ब्रांच रा अैलकार भेळा हुवणा हा।

टैमसर सगळा आप-आपरी कुरस्यां मांय जचग्या। सगळा मोट्यार सज्या-धज्या। छोरियां-लुगाईयां ई मैकअप अर स्मार्ट दिखावतै पैरवेस में। हॉल में बोल-बतळावण री जबरी गरमास। आधी हिंदी अर अंगरेजी रै सबदां में गिटपिट करता अैलकार। सगळा आप-आपरी फाइलां हाथ में लियां। पूनम तो पैलपोत इस्यै सेमिनार री भेळप देखी ही। वा डुंगी सांस खींच'र आपरी कुरसी मांय धंसगी। वा मनोमन विचार करै ही कै जकै नै बात समझाणी है तो म्हनैं जकी हिंदी आवै वीं में ई बोलणो है। म्हारो काम तो चोखो है ई।

छेकड़ बारै सूं आवणिया कंपनी रा अफसर आयग्या। सगळां रो फूलमाळा-गुलदस्ता सूं सवागत करीज्यो। परिचै सूं ठा लाग्यो कै आवणियां मोटा अफसर गुजराती है, जकां में अेक लुगाई ही। लुगाई-अफसर नै देखतां ई पूनम रो आतमविस्वास अेकै साथै ई बधग्यो। क्यूंकै वा गुजराती ढाळ में धोती बांध राखी ही। पूनम मनोमन मुळकती बोली, ''गजब धोती बांधी अे काकी! चाळा काट दीन्हा। जबरी फूठरी लाग रैयी है।'

सेमिनार में भाषणबाजी चालती रैयी। जका अैलकार कंपनी में नूंवा लाग्या, वांरो नंबर ई आयो। वांनै खुद नै आपरा टारगेट अर करियोड़ै काम अर कंपनी पेटै कीं बोलणो हो। मोटा अफसर बूझै वांरा उथळा ई देवणा। भागजोग सूं पूनम रो नंबर तीन जणां रै पछै आयो। नकल री बाण तो वीं में कदैई कोनी पड़ी। वा सैजता सूं आपरो परिचै दीन्हो। अफसर बूझ्यो कै नौकरी करण रो मत्तो मोड़ै कियां करयो? पूनम कमती सबदां में साफ बतायो कै म्हारै धणी रै चाणचकै आई बेमारी रै कारण म्हैं कंपनी में आई।

गुजरातण अफसर मुळकती बूझ्यो, ''आप तो भोत आछी परफोरमेंस दीन्ही है। टारगेट सूं बेसी प्लान बेचण री कला कियां अर कठै सूं सीखी? पैरवेस देखण में आप तो सुस्त अर सीधी-सादी घरू लुगाई-सी लागो!''

पूनम बोली, ''म्हैं सीधा-सादा कस्टमर नै वांरी बोलचाल में ई अपणायत सूं बात करूं, पछै कणैई जरूत पड़ै तो म्हारै आपबीती ई बता द्यूं... मतळब इंस्योरेंस कियां काम आवै। म्हारो विचार है कै किणी ऑफिस में ओपरो मिनख आवै तो पैलपोत वीं सूं रळ-मिळणो चाईजै। जका कस्टमर नै हिंदी-अंगरेजी नीं आवै, वां सूं वांरी ढाळ बात करयां वै बेगा ई विस्वास में आवै अर घरबिध री बात करयां वै और ई विस्वास में आवै। हरेक मिनख अणगिणती रा दुखड़ा लियां फिरै। दो बात वांरी सुण्यां कुणसो खरचै रो मीटर

चालै! रैयी बात पैरवेस री! म्हनैं म्हारै पैरवेस रो नुकसाण कदैई कोनी लाग्यो, देखो म्हैं घणकरा प्लान लुगाइयां नै दीन्हा है। हां, जे म्हनैं आथूणो पैरवेस लेवणो पड़ै तो च्यार दफा चितारणो पड़सी।''

''वाह-वाह! वैलडन... बैठो। तुम अपनी जमीन से जुड़ी हो। तुम्हें ऑफिस के वातावरण ने बिल्कुल प्रभावित नहीं किया, यानी तुमने गैरजरूरी नकल करने की कोशिश नहीं की। स्त्रियों में यह संक्रमण तो सबसे पहले होता है।'' गुजराती अफसर बोल्यो अर पसवाड़ै बैठ्या मोटा अफसरां सूं कानांबाती करै लाग्यो।

स्नेहा सेती पूनम रै ऑफिस रा सगळा चमगूंगा हुयोड़ा-सा अेक-दूजै कानी देखै हा। इत्तैक में मंच सूं सागी वो ई अफसर बोल्यो कै पूनम री रीत-नीत सूं म्हैं लोग भोत प्रभावित हां। जे आगली तिमाही में आंरो काम इणी भांत चालतो रैवै तो अठै री ब्रांच आंरी तिणखा में बधापै री सिफारस कर सकै। मंच सूं इस्सी बात सुण'र पूनम रै चिंत्या हुवै लागी। वा मनोमन चितारै ही कै कालै ठा नीं स्टाफ वाळा अड़स भाव सूं किस्यो बरताव करैगा। वीं मांय उमाव-उछाव साथै ई अणजोगती फिकर रा कीड़ा कुलबुलावै हा। स्टाफ पैली सूं ई वींनै अछूत दांई मानतो... अब ठाह नीं किस्यो बरताव करसी?

सिंझ्या री वेळा पूनम घरां पूगी। घर में सेमिनार री रिपोर्ट मांगी अर सुण'र सासू-सुसरो खूब आसीस दीन्हा। संदीप रा पिताजी बोल्या, ''बेटी, म्हांनै थारै माथै गुमान है। तूं दिखा दीन्हो कै भणी-लिखी घरू लुगाई किणी सूं कमती कोनी हुवै। संस्कारां री जड़ां सूं जुड़्यो मिनख कठैई मात कोनी खा सकै।''

संदीप केई ताळ तो देखतो-सुणतो रैयो। पछै हांसतो थको बोल्यो, ''घणा चढाओ मत पिताजी। कंपनियां में इस्या चढाव-उतार बडी बात कोनी। हां, हौसलो अवसकर बधाणो चाईजै। कालै ठा लागसी स्टाफ रो, वै सेमिनार में पूनम री बडम पेटै कियां सोच रैया है।''

आगलो दिन ई आयग्यो। पूनम दफ्तर पूगी। पूनम रै बोलण अर वींरी सादगी रो असर, कंपनी रा हरेक मोटा अफसर महसूस कर्‌यो। अेकर तो वांनै समझ आयो ई कै सैज-सरल अर अपणायत सूं भरी बतळावण कित्ती असरदार हुवै। वीं खातर अधकचरी अंगरेजी री दरकार कोनी हुवै अर नीं पैरवेस में तड़को। इत्ता दिनां ताणी स्नेहा ई पूनम नै हीणभावग्रस्त समझती रैयी, पण पूनम तो सुभीतै सूं आपरी बात राख दीन्ही।

वा पूनम नै केबिन मांय बुलायी। स्नेहा रो उणियारो आज पैली दफा वींरै नांव मुजब साचै सनेव सूं पूरमपट्ट लखावै हो। कुर्सी सूं धकै सरक'र पूनम री आख्यां सूं आंख्यां मिलावती वा बोली, ''पूनम! यार तूं तो म्हारा सगळा विचार ई उथळ-पुथळ कर दीन्हा। बियां म्हैं थनैं जकी सीख देंवती वींरै लारै माड़ी मनगत कोनी ही। निरमळ भावां

साथै ई देंवती, म्हारै मन में खोट कोनी हो। म्हनैं लखावतो कै झेंपू-सी घरू-लुगाई इत्ता मिनखां बिचाळै कियां तो बोलसी अर के करसी! साची तो आ है कै कालै म्हैं थनैं सुण'र भोत राजी हुयी। भलांई म्हारो सवारथ ई मानले कै म्हारी टीम में है थूं। आज म्हैं सोचूं कै आजादी, आतमनिर्भरता अर आधुनिकता री म्हारी परिभासा कूड़ है। जड़ां सूं थारी पकड़, थारी सादगी, थारो आतमविस्वास—इण सबदां नै सुणनै म्हनैं नेहचो हुयो कै असली सबळीकरण तो थारै जैड़ी ईज कर सकै है।''

पूनम मधरी-मधरी मुळकती बोली, 'मैडम, अैड़ी कोई बात कोनी...। माडाणी कीं ओढणो म्हारै खातर कदेई सैज कोनी रैयो, चायै वै विचार हुवै कै गाभा-लत्ता। म्हैं जियां हूं बियां ई आगलै साथै बरताव करूं। आपणो काम और ई चोखो चालसी, औ म्हारो कौल है थांसूं।''

''थूं तो खास है ई, अर थारो जोगदान भी। इणीज कारण म्हैं थनैं आगली तिमाही रै खातर 'टीम लीडर' बणावण री सिफारस कर रैयी हूं। कंपनी रै ट्रेनिंग प्रोग्राम में थारी बातां थनैं खुद नै बोलणी है। थारै सूं लुगायां आ सीख सकै कै सबळीकरण मिनी स्कर्ट, पेंट-शर्ट सूं नीं, आतमगौरव सूं होवै। ...हां औ कागद थारी टेबल माथै चेप, आ ओळी सगळां नै दाय आसी।'' कैवती स्नेहा कंप्यूटर सूं अेक कागद रो प्रिंट दियो जकै माथै छप्यो हो— Roots can give you Wings too!

◆◆

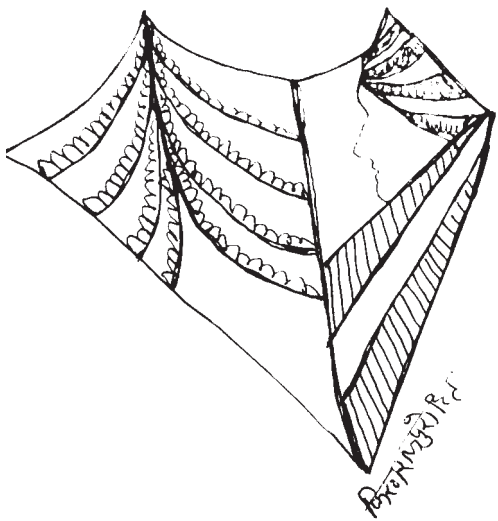

सत्यदेव संवितेन्द्र

निजर अर दीठ

रामसा री आंख्यां में कठैई ऊंघ नीं ही। मन में सांतरी उथळ-पुथळ मचियोड़ी ही। कुणसो काम करै, नीं करै, कीं ठाह नीं पड़ै ही। इण तरै ई आधी रात बीतगी ही। दिन ऊगतां ई तो सगळा ई पांवणा-पई आवण वाळा हा। भाई-गिनायत अर दूजा ई केई। रामसा नै वां सगळां सारू वैवस्था करणी ही। रुकण री अर भोजन पाणी री वैवस्था। दूजा ई घणा काम हा। सोचतां रामसा डाफाचूक व्हैण लागग्या हा। मांय रा मांय अमूझ रैया हा। तो ई रामसा कीं जेज ओरूं सोवण रा जतन करता रहया। वै आंख्यां मींचै अर धकलै दिन रा दरसाव साम्हीं आय जावै। इतरा पांवणा-पई कठै रुकैला अर कुण आय'र उणरी मदत करैला... ? अैड़ा सवाल घणा ई हा, पण पडूत्तर अेक रो ई नीं हो। छेवट रामसा अपौढा व्हैय'र बैठग्या अर विचारण लागा। कीं जेज सोचता ई रैया। ऊंघ अैड़ी उडी कै आंख्यां सूं घणी अळघी व्हैगी अर रामसा आपरै मांय ईज कठैई गमग्या। गमिया ई अैड़ा कै खुद नै ई कठैई नीं लाधै। यूं तो कमरा मांय अंधारो ई हो, पण बारै सूं कीं उजियाळो आवतो हो। कनै ई सुगना निचिंती व्हियोड़ी सूती ही। ज्यूं उणरी अेक नैरी ई दुनिया होवै। साव न्यारी-निरवाळी अेक दूजी दुनिया। सुगना उण आपरी ईज दुनिया में गमियोड़ी ही, जिणमें अंगेई चिंत्या नीं ही। छेवट रामसा ई आपरै मन में अेक नूंवी दुनिया रचावण लाग्या। विचार री अेक धारा मन रै सागै दूरां तांई पूगगी। रामसा री काया तो बठै ई ही, पण मन रै सागै वै ई दूरां तांई पूगग्या अर आपरी चिंत्यावां सूं कीं मुगत होवण रा जतन करण लागग्या।

:: ठिकाणो ::
45, 'उद्‌भव'
आदिनाथ नगर
पींपळी चौराहा, जोधपुर
मो. 9828575800

कीं जेज पछै रामसा उठ'र बिना खुड़को करियां रसोई में जाय'र चाय बणावण लागा। चिंतन री धारा अजै ई चालती ही, धकै सूं धकै जाय रैयी ही। सुगनां री ऊंघ नीं उडै, इणरो ध्यान राखतां सावचेती सूं काम करता रैया। रामसा चाय छाणता ई हा कै वांनै कोई रो पगेरो सुणीज्यो। लारै मुड़'र जोयो ...सुगनां ऊभी ही। आंख्यां उंघाळी ही, पण वळै अेक सावचेती ई ही। उण सावचेती सागै कालै री चिंत्या ई निंगै आवती ही। सुगनां कीं जेज चुपचाप लारै ऊभी रैयी। पछै बोली, ''इण टैम चाय कदैई पीवो तो कोनी। आज अैड़ो कांई व्हैयग्यो कै म्हनैं चाय बणावण रो नीं कैयो। म्हनैं कैय देंवता तो म्हैं बणा लावती। कांई अजै आपनै ऊंघ आई कोनी ?''

''अंगेई नीं।'' रामसा अेक गैरी सांस लेय'र बोल्या। ऊंघ तो कठैइ अळघी-नैड़ी ई कोनी अर होवै ई कीकर ? कालै रा सगळा पंपाळ आंख्यां साम्हीं आवै। दिन ऊगैला अर उजियास होय जावैला, पण म्हारै मन रै मांय घोर अंधार भरीज जावैला। कीकर होवैला सगळा काम ? घरवाळा अेक ई आया कोनी। भाई-बीरा सैंग रूस्योड़ा बैठा है। जामणजाई बैनां ई नीं आई जिकां माथै म्हैं घणो गीरबो करतो। आपां दोन्यूं ई करता। कीं कोनी, अै सै समै-समै री बातां है। समै माड़ो आवै जद यूं ईज होवै, कोई किणी रो साथ नीं देवै।''

सुगनां छानी-मानी सुणती रैयी। रामसा रै उणियारै माथै मंड्योड़ी चिंत्या री आडी-तिरछी लीकां देखती रैयी। पछै बोली, ''अैड़ो कांई व्हैग्यो ? कालै सगळा ई आवैला। आय आंगणै ऊभा तो रैसी। गांव रा मिनख माजनै में धूड़ घालसी, उण डर सूं ई आवैला। सुवासिणयां रै काम में नीं आवै। वांनै भगवान देखै। भाई री छोरी कोई पराई नीं व्है अर जे पछै ई कोई नीं आवै तो म्हैं अेकली ई घणी हूं। म्हारै माईतां म्हनैं औ ईज सिखायो है। म्हैं कोई धंतरजी री परवाह कोनी करूं।''

रामसा बोल्या, ''म्हैं आज तांई सगळां रै काम आयो। पइसा-टका री मदत ई म्हैं राखी, जित्ती म्हारी सरधा ही। आज म्हारै काम पड़ियो तो म्हारा भाई छिपला खावै। कोई साम्हीं तो आवै ई कोनी। अैड़ी तो भगवान कोई रै सागै नीं करै।'' रामसा उणमना व्हैता आपरी पीड़ सुगनां नै सुणावता कैयो।

सुगनां हिमती ही। साचाणी कोई री परवा तो वा करती'ज नीं। वा बोली, ''आ आप-आपरी निजर री बात है। जिणरी जैड़ी निजर व्है, वो उणी'ज भांत सूं सोचै। आ तो इण जगती री रीत है। इणनै कोई बदळ नीं सकै। मिनख ज्यूं टैम देखै, वियां ईज चालै। अेक लीक मांडीजगी है, जिण माथै लोग चालता जावै। कोई न्यारो कै नवो मारग कोई मिनख अठै सोधै ई कोनी।''

रामसा बोल्या, ''आ निजर री नीं, मिनख री दीठ री बात होवै। निजरां देखी बातां साची तो होवै, पण उणमें जगती री बातां भेळी व्है। आपरी दीठ रै सागै मिनख सोचै तद ई नवौ मारग मिलै। इण वास्तै मिलै, क्यूंकै उणमें इण लोक री बातां भेळी नीं व्है। इण

वास्तै म्हैं कैया करूं कै निजरां सूं सगळा ई मिनख नमै, पण दीठ नै कितरी नमाई, आ बात नीं सोचै। इण वास्तै बात बणै ईज कोनी। निजर अर दीठ नै समझण वाळा मिनख हमै कठै मिलै ? सोधियां ई नीं लाधै सुगनां। अर आ बात ई मिनखां नै परबस बणाय देवै... ।''

रामसा रै घरां पांवणा-पई आय पूगा। भाई-गिनायत ई सैंग आयग्या। रामसा रो आंगणो भरीजग्यो। लोग साची ई कैवै कै माया मिनखां री। मिनखां सूं ईज घरां री सोभा वधै। सुगनां सगळां नै देखती रैयी अर मन मांय मुळकती रैयी। रामसा अेक कांनी चुपचाप ऊभा सुगनां नै ईज देखता रैया। देखता रैया अर मन ई मन हरखता रैया। रामसा रो नेनकियो भाई सुगनां रै धोक दीनी तो सुगनां उणनै घणी आसीस देंवती बोली ''दीनजी, आप आयग्या तो सैंग आयग्या। हमै कोई कमी नीं रैयी। आपरी लाडेसर भतीजी रो ब्यांव है। फरज जित्तो म्हारो है उत्तो ई आपरो ई है। आप आपरो फरज निभावो, म्हनैं घणो हरख है। इणसूं बेसी म्हैं कीं नीं कैय सकूं।''

दीनजी बोल्या, ''कोई आपरो फरज निभावै तो आ मोटी बात नीं है। आ हरख री बात ई नीं होया करै भाभीसा! फरज तो फरज होवै, वो तो निभावणो ई पड़ै। जे कोई दोय मीठा बोल बोल देवै तो इणमें कोई रो कीं जावै कोनी, पण आ बात रामसा भाईसा नै कुण समझावै। मीठा बोल बोलणा ईज व्है, इणमें कोई नै कीं लेवणो कै देवणो नीं पड़ै।''

सुगनां झट बोली, ''दीनजी, आज थांरै भाई नै कीं कैवण रो अर समझावण रो दिन नीं है। थांरी निजर में वै मीठा बोलणिया नीं व्हैला, पण याद राखजो कै वै थांरा मोटा भाई है। थां सूं अलबत चार दीवाळी वधती देखी है। वांनै थे कै म्हैं बदळ नीं सकां। इण वास्तै अैड़ी बात अबार नीं करणी। आपां नै बात ढाकणी है, बिगाड़नी कोनी।''

''म्हनैं बात बिगाड़नी व्हैती तो म्है आज अठै आवतो ई कोनी। म्हैं तो म्हारै मन री बात कैवूं। अर म्हारी बात तो खरी'ज है, आप ई जाणो भाभीसा।'' दीनजी तो ई आपरी बात सुगनां साम्हीं राख दीवी।

नैनकी बींदणी कनै ई ऊभी ही। वा दीनजी नै कैयो, ''आप कांई कैवो हो, कीं ठा पड़ै आपनै ? आप आज अठै क्यूं नीं आवता ? लाडेसर विमला रो ब्यांव है अर आप उणरा काका हो। आप कीकर कैय सको कै म्हैं आवतौ ई कोनी! कोई बात बोल्यां पैली विचार करणो चाईजै।''

दीनजी आपरी घरआळी नै आंख्यां तरेर'र बोलता जोवतां ई रैयग्या। कीं नीं कैय सक्या। कैवै ई कांई, दीनजी री घरआळी बात तो खरी ई कीनी ही। सुगनां रै घणा ई काम हा। वा इण पंचायती सूं बचणो चावती। बींदणी रै सिर माथै हाथ धरतां वा बोली, ''दीनजी रीस में बोलग्या है। कीं कोनी, अबार मून धार लीजो। आपां ई बात बणावणी पड़ै। मिनख आपरी निजर सूं बोलै। आपां नै दीठ अर धीजै सूं काम लेवणो पड़ै। निजरां

साम्हीं जकौ होवै, उणसूं ईज काम नीं चालै। वांरी निजरां वांनै ईज छाजै, आपां आपरी दीठ रै सागै ई चालां तो बात बण जावै।''

दीनजी कामकाज में लागग्या। बारै सूं आयोड़ा पांवणा अर गिनायत तो जाणै सैंग बींद बणियोड़ा ईज हा। रामसा अर दीनजी वां सगळां रा हुकम बजावता रैया। कोई रै कीं कमी नीं रैय जावै, इण रा इज जतन करता रैया। विमला रा सुसरा जी बोलाबाला बैठा देख रैया हा। वै तो सगळां सूं मूंघा पांवणा हा। सैंग जणा वांरी हाजरी में ऊभा हा। बींद रै बाप नै कीं तकलीफ नीं हुवै, आ चिंत्या सगळा ई करता हा। वै उठ'र रामसा कनै गया। पछै हाथ जोड़'र बोल्या, ''वैवाईसा, म्हैं जाणूं कै बेटी रै बाप नै केई पापड़ बेलणा पड़ै। सगळी जाजमां वो इज बिछावै अर सांवटै। औ इण दुनिया में व्हैतो आयो है, पण ध्यान राखण री बात आ है कै बेटै रा बाप नै ई अै दिन देखणा ईज पड़ै। समै-समै री बात है।''

सगोसा बोल्या, ''म्हैं ई म्हारी दोय बेटियां नै परणाय'र वांरै घरां मेली हूं। इण वास्तै म्हैं आपरी पीड़ा जाणूं अर म्हारी बात कैवणी चावूं कै म्हैं आपरै सागै ई हूं। इण टैम म्हनैं आप वैवाई-गिनायत मत मानजो, आपरो भाई मान लेईजौ।''

सुण'र रामसा री आंख्यां मांय पाणी भरीजगो। खासी ताळ वै हाथ जोड़्यां ऊभा रैया। पछै बोल्या, ''बेटै रो बाप जद आपरी निजर मुजब सोचै तद वो साचो गिनायत हुवै अर जद वो आपरी दीठ नै काम लेवै तद वो भाई ज्यूं व्है जावै। इण वास्तै ई सगां नै भाई अर गिनायत दोय सबदां सूं बतळाईजै।''

◆◆

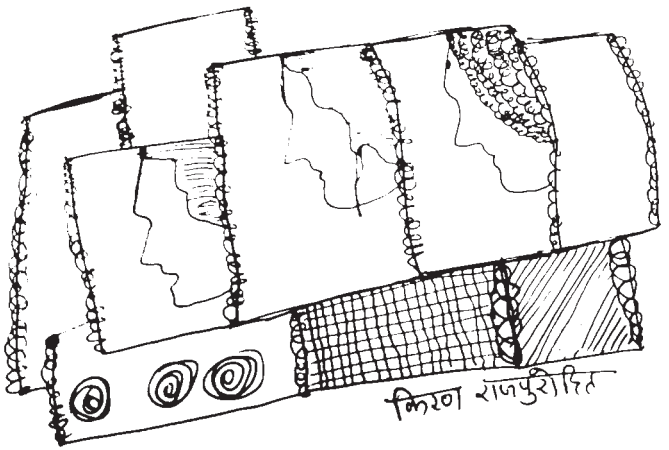

 ISSN : 2320-0995

पन्नालाल कटारिया 'बिठौड़ा'

सौतण

विमला आज वेंगळा हुयोड़ी छूटा लटियां अर मैला-कुचैला गाभा पैरियोड़ी गांव री गळियां मांय रुळती फिरै। बाल चिंट सूं गुंथीज्योड़ा। सिनान तो स्यात वा केई महीना होया इयां लागै करियो ई कोनी। बालां में तो बगैर सिनान करियां ई घणो सारो तेल सिर माथै ई चोपड़ देवै लागै।

गांव रा सगळा ई घरां तक फिरती फिरै। कोई उन्ही रोटी देवै तो कोई ठंडी-सूखी कै बासी रोटी देवै। वा रोटी ले लेवै। देवै जिणां रो भलो नै नीं देवै उणां रो ई भलो। भावै जितरी जीम लेवै अर बची-खुची गंडक कै गऊमाता नै देय देवै। कदै-कदैई तो कुण ई दस बीस रुपिया ई दे देवै तो भुजिया-बिस्कूट पण खाय लेवै। किणने ई रै रो तूं नीं कैवै। वा सगळां नै ओळखै। मिनख लुगायां कै टाबर सगळां नै नांव सूं ओळखै। ओळखै ई क्यूं नीं, नैनी-मोटी इण गांव मांय ईज तो व्ही है। उणनै पूरी तरियां काली (पागल) तो नीं कैय सकां, पण चेताचूक जरूर कैय सकां। उणनै चेतौ नीं रैवै कै कद सिनान करणो कै बाल बावणा? कदै रोटी खावणी कै पाणी पीवणो? जद मिल जावै तद ई सही। कुण खुआवै रोटी अर कुण पावै पाणी। आपां जाणां ई हां कै साजा मिनखां री सारवार ई करता जेज लगावै तो पछै काला नै कुण गिणै इण दुनिया में? अेकर तो इण अबळा सागै पण बाथोकड़ो कर दियो हो कुण ई दारूड़ियो। जोग चोखो हो कै उठीकर कोई अेवड़ चरावण वाळो बापड़ी नै छोडाय दी, नींतर कांई ठाह वो दारूड़ियो किसी कोजी गत कर न्हाखतो। विमला किणी सूं पांच-दस रुपिया कदै-कदाऊ मांग लेवै। पण डोळ देखनै ईज मांगै। वा

:: ठिकाणो ::
गांव-बिठौड़ा कलां
वाया-मारवाड़ जंक्शन
जिला-पाली (राज.)
मो. 9828827104

अंदेसो लगाय लेवै कै औ देवै जिसो है कै नीं। पांच दस रुपिया मिल जावै तो विमल गुटखो मूंडै मांय न्हाख लेवै अर थोड़ो घणो खाय-चिगद नै थूक देवै। सवार रा दिनूगै घर सूं बारै निकळ जावै। घर इण वास्तै लिखू हूं, क्यंकै वा पीहर मांय उणरै बाप रै घर मांय रातवासो जरूर लेवै, पण खावणो-पीवणो वा पूरै दिन गांव री गळियां मांय फिरती थकी पेटभराई कर लेवै।

घर मांय उणरो ठाणो-ठिकाणो अेक कच्ची थेपड़ां वाळी पोळकी मांय ईज रैवै। उण रा गूदड़ा न्यारा ईज पड़िया रैवै अेक खूणै मांय। कुण संभाळै उण रा गूदड़ां नै, जुंआ रा जाळा नै। गूदड़ा दिन भर यूं ईज पड़िया रैवै! जाणै स्याळी री खूबी व्है ज्यूं। उणरो बैठण रो खास ठाणो गांव रै पीपळ कै पछै बड़ला हेठै। बड़ला हेठै नजीक ई चाय री थड़ी पण है। वठै आवता-जावता कोई उणनै चाय रो कप पण दिराय देवै तो वा पी लेवै। दिखण में तो वा सफा वेंगळा है, पण जे उणनै कोई तावै-तपावै तो पछै उणरी सात पीढी री बातां खोतर न्हाखै। इण वास्तै घणखरा तो इणसूं पंगो ई नीं लेवै। घणकरा तो डरपता उणनै बतळावे ई कोनी। विमला कोई जन्म री काली कै वेंगळा कोनी ही।

याद करां जद उणरी लारली बीती जिंदगी री कहाणी तो वा उण रा माईतां री मोबी अर अेकली औलाद ही। घणी फूठरी-फर्‌री अर गोरी निछोर। नख दियां लोही आवै जिसी। माईत अर दादा-दादी उणरो घणो ई लाड राखियो। व्हैला कोई पांचेक बरस री जद उणरी जन्मदाता मावड़ी सुरग सिधायगी। दादा-दादी उणरी सार-संभाळ करी। बाप पेमो तो बापड़ो दैनकी रा जुगाड़ में रैवतो। लुगाई रो साथ छूट जावण रै कारण हरेक बगत चिंता मांय डूब्योड़ो रैवतो। पेमा रा माईत जियां-तियां तिकड़म बैठाय पेमा रै नाता री लुगाई लेय आया। विमला खातर मुई (सौतैली) मां ले आया। नाता वाळी रै टाबर नीं हुया जितरै तो विमला रो थोड़ो-भोत ध्यान राख्यो, पण टाबर होयां पछै विमला उणरी आंख्यां मांय खटकण लागी, पर दादा-दादी उणरो खासो लाड राख्यो। दादा-दादी रै लाड रै कारण विमला जोध जवान व्हैगी। परणावण जोग व्ही तो उणरी सगाई नेड़लै ई गांव में कर उणरो ब्यांव ई कर दियो। दादा-दादी रै छाती माथलो भार अळगो व्हैगो। विमला नै चोखो घर अर वर मिल्यो। दादा-दादी री पारखी निजर रै पाण चोखो घर खोज दियो।

विमला रो घरधणी उणनै अहमदाबाद साथै लेयग्यो, जठै वो अेक प्राइवेट कंपनी मांय नौकरी करतो हो। विमला रो घणो लाड अर मान सनमान राखै। विमला घरां मौज करै। मांगै जको ई मिल जावै। विमला रै अेक पैल मोब रो छोरो जलमियो अर पूछेंटा री छोरी जलमी। दो बैन-भाई उपरांथळी रा जलम गिया। विमला टाबरां रै साथै-साथै रमै तो कदै बेजा तंग व्है जद रोवणखारी व्है जावै। टाबरां नै राखणा अर घर रो कामकाज निवेड़णो दोरो व्हैगो, पण होळै-होळै करती रैवै।

विमला जद पीहर आवती तो अेक नामी सेठाणी सूं कमती कोनी लागती। रेशम कै साटण री साड़ी में वा हीरोइन रै उनमान जचती ही।

अठीनै नाता री मां रै दो छोरियां अर दो छोरा जलमग्या। मारवाड़ी कैवत है कै छोरियां तो उकरड़ी मोटी व्है ज्यूं बेगी ई मोटी व्है जावै। साथै-साथै छोरा पण मोटा व्हैगा। छोरियां ब्यांव जोगी व्हैगी। विमला रो मान पीहर मांय होळै-होळै समै बीत्यो जियां-जियां कमती व्हैगो। दोन्यूं छोरियां रो ब्यांव कर दियो। छोरियां सासरै जावण लागी। विमला रा दादा-दादी ई हमै बूढा व्हैगा हा। वै पण रामजी नै प्यारा व्हैगा। अबै विमला पीहर मांय अनाथ व्हैगी। बाप थोड़ी भोत उणनै राखतो। उणरै खून रै अंश रै कारण कै पछै मिनखां री सरम रै कारण।

पेमा रै नाता री लुगाई री छोरियां हाथ पीळा करै जिसी व्हैगी तो उणां रो ब्याव कर दियो, पण सैसूं नैनकी छोरी विमला रै घरवाळा सूं छानै-छुपकै हेत राखण लागगी ही, जिणरो भान घर में किणनै ई नीं हो। नैनकी नै सासरै मेली। इयां दोन्यूं ई सासरै जावै ही, पण नैनकी री प्रीत बैनोई सूं जुड़ियोड़ी ही। बैनोई जद आवतो तो नैनकी उणरी बेसी मान-मनवार करती ही। मान-मनवार बेसी करण सूं पण किणनै ई बैम नीं व्हियो। बैम करै पण क्यूं, साळी तो बैनोई री मनवार करै ई है। घर में किणनै ई ठाह नीं हो। विमला तो सगळो ई धोळो-धोळो दूध ई समझ रैयी ही। साळी-बैनोई बातां करै तो वा क्यूं बैम करै। नैनकी री मां नै स्यात ठा हो, पण वा किणनै ई कीं नीं कैयो। बात घणा दिना सूं घणी व्हैगी। नैनकी उणरी बैन विमला रै साथै अहमदाबाद जावण री जिद करण लागी तो विमला नैनी बैन री जिद नै कीकर टाळती ? वा उणनै साथै ले जावती। होळै-होळै विमला नै पण थोड़ो बैम होवण लागो तो वा बैन नै गांव पुगाय दी। बैनोई पण गांव आवण-जावण लागग्यो। नैनकी थोड़ा दिन सासरै रैवण लागी अर थोड़ा दिन पीहर रैवण लागी।

नैनकी रै अेक टाबर पण जलमग्यो। जापो होयां अेक महीनो ईज होयो हो कै वा तो सासरा सूं टाबर नै छोड'र बैनोई रो साथ कर उणरै साथै ईज उण रो पल्लो पकड़ जावती रैयी। कठैई अळगी दिसावर—धर मजलां धर कोसां। विमला बापड़ी आठ-दस दिनां तांई तो उडीकती रैयी। छेकड़ अहमदाबाद सूं गांव आवणो पड़ियो। वा मोरणी रै जियां कुरळावण लागी। रोवण लागी, पण अब कांई व्है।

विमला घणी रोई अर कुरळाई तो गांव रा मौजीज मिनख उण रा बाप पेमा नै समझायो अर पुलिस रै जरिये नैनकी नै दिसावर सूं पाछी गांव लेय आया। बैनोई उणरै साथै ईज हो। थाणा में पण वा बैनोई रो साथ छोडण नै त्यार नीं ही। छेकड़ मौजीज मिनखां अर थाणेदार रै समझवण सूं वा मानगी अर बैनोई नै छोडण नै त्यार व्हैगी अर माईतां रै साथै गांव आयगी।

नैनकी नै दूजी ठौड़ नातै देय दी। विमला नै गैरी सांस मिली अर वा धणी रै साथै पाछी राजी-बाजी अहमदाबाद गई परी। सूती गंगा बहती रैयी भरपूर नींद लीधी। कैवत है कियां ई व्हो, दिनूगै रो भूल्योड़ो सिंझ्या तांई घरां बावड़ आवै तो उणनै भूल्योड़ो नीं कैयीजै। पण आ सांयती घणा दिनां तक कायम नीं रैयी। नैनकी अर बैनोई रै बिचाळै कानाबाती वाळी बंतळ चालू ही। बैनोई री भुळावण मुजब नैनकी उण रा घरधणी नै लेय'र कमावण सारू अहमदाबाद लेयगी। नैनकी रै घरवाळा नै बापड़ा नै कीं ठा नीं हो। केई दिनां तांई अहमदाबाद में दैनकी री भाळ करी अर दैनकी रो जुगाड़ होयां पछै दैनकी करण लागो। नैनकी घरै अेकली रैवती ही। बैनोई अर साळी रो हेत पाछो हरो होवण लागग्यो। अेक दिन मौको देख'र दोन्यूं अहमदाबाद सूं निकळग्या अर मुंबई जाय पूग्या। नैनकी रो घरवाळो जद थाको-पाच्यो घरै पूगो तो सिंझ्या रै समै घर रै ताळो लटक्योड़ो देख्यो तो करम फोड़ दिया। पूरी रात उडीक्यो, पण नैनकी अहमदाबाद में व्है तो आवै! दूजै दिन ई नीं आई तो वो सांस-सो पाल'र आपरै गांव आयग्यो। कानाबाती सूं पतो लगायो तो ठा पड़्यो कै वा तो बैनोई रो लारो पकड़ लियो अर जाती रैयी।

वठीनै विमला धणी रै कितरा ई दिन तक घरां नीं आवण रै विजोग में रोवण अर छाती-पीटो करण लागी। आस-पड़ोस वाळा थथोबो अर धीजो दिरायो अर गांव पुगाय दी। विमला रोवती-रींकती पाछी पीहर आयगी। अबै माईत उणनै ईज खोटी खरी सुणावै कै ध्यान क्यूं कोनी राखियो, पण वा बापड़ी धणी रै लारै-लारै कठै पौ'रो राखै। माईत उणनै बतळावै ई कोनी। विमला रै कनै उण रा दोन्यूं टाबर रैयग्या। वा पेट पाळण सारू दैनकी करण लागी।

विमला रो घर धणी केई दिनां पछै आपरै सुसरै पेमा नै फोन करियो कै विमला चावै तो म्हारै साथै रैय सकै है। म्हे दोन्यूं नै राखण नै त्यार हूं, पण साळी नै तो नीं छोड सकूं। नैनकी री मां जवाई रै पख में ही कै नैनकी ईज उण घर मांय रैवै। विमला रो घर भागै तो उणरै कीं फरक नीं पड़ै। पेमो आपरी बेटी विमला नै कैयो कै थूं चावै तो नैनकी रै साथै ईज उण घर मांय रैय सकै। वो दोन्यूं नै घर में साथै राखण नै त्यार है। बापड़ी विमला नै घर छोडणो मंजूर कोनी हो। वा चावती कै कियां ई उणरो घर आबाद रैवै। धणी रै फोन पर कानाबाती मुजब बस मांय बैठ'र विमला आपरै सासरै जावती रैयी। पांच-सात दिन विमला नै सासरिया राखी अर पछै उणरै मारा-कूटो सरू कर दियो। दोन्यूं टाबरां नै ओरा मांय बंद कर'र विमला नै धक्का ठोक'र बारै काढ दी।

बापड़ी विमला नै कांई ठा हो कै दाळ मांय काळो है अर मोटी चाल व्है सकै है। वा उण घड़ी अर उण वेळा ईज हाय तरासियो करती थकी चेताचूक व्हैगी अर पछै वेंगळा (बावळी) व्हैगी। कालायां करण लागगी। टाबरां रै विजोग रै कारण वा घणी ई रोई कै म्हनैं म्हारा टाबर देय दो, म्हैं म्हारा टाबरां बिना नीं रैय सकूं।

आज वा पीहर मांय घर-घर फिरै है। अेक सगी बैन नैनकी उणरी मोटी बैन विमला री सौतण बण'र उणरो घर उजाड़ दियो। भली चंगी बैन नै वेंगळा (पागल) बणाय न्हाखी।

कैवत साची है कै मालिक रै घरै देर है, पण अंधेर कोनी। जिंदगी में करियै पाप री सजा तो भुगतणी ईज ही। विमला रो बेटो उण रा बाप कनै रैवतो थको मोट्यार व्हैगो, पण नैनकी रा बोरिया ढळगा। पीहर उणरै वास्तै हजार कोसां अळगो व्हैगो। सासरै में उणरी कोई पत कोनी करै। विमला रा टाबर छोरो अर छोरी नैनकी नै मां जिसो मान नीं दियो। छोरो अर छोरी पढाई में थोड़ो मन लगायो तो छोरो पैली बार री परीक्षा में ई पटवारी बणग्यो। पटवारी बणतां पाण वो मां विमला कनै पूग्यो, पण विमला नै किसो चेतो हो! कुण मां अर कुण बेटो अर कांई व्है पटवारी? उणनै आं बातां सूं कीं लेणो-देणो नीं हो। वो 108 एम्बुलेंस नै फोन करनै बुलाई अर विमला नै मांय बैठाय'र सफाखानै लेयग्यो। सफाखना सूं उणनै अेक स्वयंसेवी संस्था भेजीजी।

विमला रो इलाज सरू व्हियो। संस्था में विमला रा बाल कतरीज्या। सिनान-संपाड़ो कराईज्यो। रोजीना उणरो बेटो उणसूं मिलण नै जावै। विमला आपरा जोध जवान हुयोड़ा बेटा नै देख्यो अर सार-संभाळ रै पाण बरोबर इलाज मिलण सूं अेकदम भली-चंगी व्हैगी। बेटो आपरी मां विमला नै साथै राखण सारू अेक औरो भाड़ा पर ले लियो अर मां री सेवा करण लाग्यो। मां री सेवा रै पाण उणरी बेगी-सी पोस्टिंग व्हैगी नजीक रै ईज गांव में। अबै मां अर बेटो मौज सूं रैवै। मां टैमसर रोटी पोय देवै अर टीपण त्यार कर देवै।

नैनकी रै बैन री अैड़ी हाय लागी कै हमै वा माड़ी-मांदी रैवण लागी। तपास में डॉक्टर उणरै कूख रो कैंसर बतायो। विमला री बेटी पण भाई रै बुलायां मां विमला कनै आयगी। घर मांय नैनकी री सेवा करणियो कुण ई कोनी। घरवाळो पण नशेड़ी व्हैगो। नशो नीं मिलै तो पींडियां नै जेवड़ी सूं काठी बांधै अर मचली माथै गुड़क जावै भूखो ई। कुण रोटियां पोय'र देवै। मांदगी रै पाण नैनकी राम नै प्यारी व्हैगी अर चार-छह महीणां रै आंतरै उणरो धणी ई मर पूरो हुयो। विमला अेकदम भली-चंगी व्हैगी। बेटा-बेटी रो चोखी ठौड़ ब्यांव कर दियो। बेटो अर बीनणी विमला नै हथाळियां मांय थुकावै, घणो मान राखै अर घणी सेवा करै।

विमला री सौतण नैनकी नै उणरै करमां री सजा मिलगी।

◆◆

रोचिका अरुण शर्मा

गूगल आळी बहू

दिलीप नै सिलिकन वैली, अमेरिका में काम करतां छह बरस होवण लाग रैया हा। आं छह बरसां में बो ''छुट्टी कोनी, छुट्टी कोनी'' करतो अेकर ई आपरै देस आयो हो। पाछो गयां पछै बो तीन-चार नौकरियां बदळी अर वीडिओ कॉल करतो तो कैवतो, ''म्हनैं टैम ई कोनी मिलै, अठै तनखा तो डॉलर में मिलै, पण जी काढ लेवै, सांस ई कोनी खावण देवै।''

दिलीप रा बापूजी गिरधारी जी कैवता, ''बेटा, तूं तो परदेस को ई होय'र रैयग्यो। म्हैं तो सोच्यो कै बेटो विदेस गयो है, सो म्हारो ई नाम घणो ऊंचो होयग्यो, पण आ कोनी जाणता हा कै थासूं मिलण खातर ई आंख्यां तरस जासी। अब जो भी है, ठीक है बेटा, जियां रामजी री मरजी। थारै बडोड़ै भाई रो ब्यांव मंड्यो है, सो तूं ब्यांव में तो आवैलो के नीं? ईं ब्यांव में आवै तो पछै थारै खातर ई छोरी देख लेवां। आगलै मौरत नै थारो ई ब्यांव कर'र गंगाजी न्हावां।''

भाई रै ब्यांव री खुसी री खबर सुणतां ई दिलीप रो जीव काम सूं उचटग्यो अर बो आपरै दफ्तर में बॉस सूं छुट्टी री बात करली। महीनै भर री छुट्टी मिलगी अर दिलीप आपरै देस लाडनूं आवण री त्यारियां करण लागग्यो। भाई बींद बणसी, बीं खातर विदेसी घड़ी, टाई, महंगा जूता, बापू गिरधारी जी खातर बण्योड़ी शर्ट अर घड़ी मोल लेय'र राख छोडी। जद देस आवण सारू हवाईज्हाज में बैठ्यो तद मां नै फोन ई कर दियो हो। मां ई बेटै री घणी उडीक करण लागी अर ब्यांव सूं बीस दिन पैली ई जकै दिन दिलीप आवै हो, देहली अर चौखट पर सूंण रा चोखा-सा

:: ठिकाणो ::
A2-103, Casagrand Amethyst, Elcot Avenue, Shollingnallore
Chennai-600119
मो. 9597172444

 ISSN : 2320-0995

मांडणा मांड लिया हा। घणी धूमधाम सूं ब्यांव सळट्यो अर मोकळा छोरी रा बाप दिलीप खातर ई आपरी छोरी देवण सारू गिरधारी जी सूं खुशामद करण लाग्या।

दिलीप सारू ब्यांव खातर छोर्‌यां रा इत्ता रिस्ता देख'र गिरधारी जी बोल्या, ''दिलीप, बेटा तूं आयोड़ो ई है तो इत्ता रिस्ता आया है, कोई छोरी पसंद करलै अर म्हांनै बता।''

दिलीप मुळकतो बोल्यो, ''अरे बापूजी, अभी तो जकै रो ब्यांव हुयो है, बीं बीनणी नै दोयेक साल नूंवी बीनणी बणी रैवण द्यो। म्हारै ब्यांव री थांनै इत्ती के उतावळ है?''

''बेटा, थारी भी तो नौकरी लाग्योड़ी है। अठै अबार आयोड़ो ई है, तो बाकी के रैयग्यो। फेर थारो के ठा कद आवणो हुवै! अेक आपणै बास री छोरी है किरण, पैली बा जयपुर पढ्या करती। बीं रा पिताजी बतायो कै इब बा बैंगलोर में नौकरी करै। देख्यो-भाळ्यो घर है, तन्नै छोरी जच जावै तो थारो ई बेगो-सो ब्यांव मांड देवां।''

दिलीप आपरै बापूजी री बातां कोई उथळो नीं दियो। गिरधारी जी आपरी जोड़ायत नै आगै करता बोल्या, ''तैंरै लाडेसर नै ई तूं ई पूछलै कै आखिर बात कांई है? म्हैं पूछूं तो मूंडो सींव राख्यो है। इत्ती ताळ किणी भींत सूं बतळातो तो बा ई हां-ना रो उथळो देय देंवती।''

मां बोली, ''कांई बात है दिलीपिया! थारा बापूजी म्हारै ऊपर रोळा करण लागर्‌या है, तूं है जिकी बात बतावै क्यूं नीं? बा बैंगलोर आळी छोरी फूठरी है अर आछै घर-घराणै री है। म्हारै देख्योड़ी भी है।''

''मां, अब तन्नै के बताऊं? तूं रीस कोनी मानै तो अेक बात बताऊं।''

दिलीप आपरी मां रै सारै बैठग्यो अर बीं रो हाथ आपरै हाथां में लेंवतो बोल्यो, ''मां, म्हैं बठै अमेरिका में ई ब्यांव कर लियो।''

''कांई?'' मां बीं रै पटपड़ै में अेक जोरदार थाप मेल दी।

''हां मां! म्हैं बठैई अेक छोरी सूं ब्यांव कर लियो कोर्ट में। तूं पूरी बात तो सुणलै, पछै थारै जचै जियां करी। बा गूगल में काम कर्‌या करै। कोरोना री टैम जद नौकरियां कोनी ही, बा म्हनैं भोत मदद करी ही मां। बीं रा माईत भी बठै ई रैव अर बा बठै ई जलम्योड़ी है—ग्रीनकार्ड होल्डर है। कोरोना री टैम म्हारी नौकरी छूटगी ही अर अठै आपणै देस में ई लोगां नै नौकरी सूं काढ रैया हा। फेर अठै आय'र करतो ई कांई? बठै सरकारी नेम है कै नौकरी नीं हुवै जद छह महीनां सूं बेसी रैवण कोनी देवै। वर्क-वीजा कैंसर हो जावै। मां तेरी छोटकी बहू को नांव विद्या है। म्हैं अेक-दूसरै नै पैलां सूं ई जाणता हा अर ब्यांव बाबत इयां सोच राखी ही कै भाईजी रै ब्यांव री बगत थारै सूं बात करसूं। पण कांई करतो? अमेरिका छोडणो पड़तो अठै घरां बैठ्यो रैवतो। इण वास्तै

मजबूरी में थां लोगां नै बतायो कोनी। बठै सरकारी नेम औ भी हो कै ग्रीनकार्ड होल्डर सूं ब्यांव करयां बठै आपां नै ई रैवण री छूट मिल जावै। हालात ई इस्या हा कै गासियो कंठ सूं नीचै ई कोनी उतरै अर थूक्यो ई न जावै। ब्यांव टाळ दूजो कोई रस्तो ई कोनी दीस्यो। म्हनैं ठा है कै बापूजी घणी मैणत सूं कमा'र म्हारी पढाई री फीसां भरी ही, फेर म्हैं कियां कैवतो कै म्हारी तो नौकरी ई छूटगी, अब थे म्हनैं घर बैठ्या नै ई जीमाओ? मां, थारी छोटकी बहू सुभाव री भोत चोखी है। तूं बींनै देखती तो बा थारै अेन जच जासी।'' पूरी बात विगतवार बताय दिलीप आपरै बटुअै मांय राख्योड़ी आपरी जोड़ीदार री फोटू मां नै दिखाई। मां फोटू देख्यां पैली ई पूछ्यो, ''छोरी के जात री है?''

''मां, बाणिया है बीं रा माईत। अबै ब्यांव करयां पछै बा आपणै जात री हुयगी। जात सूं के फरक पड़ै!''

''रामजी कीं ठीक ई करयो होवैलो। जद ब्यांव होय ई गयो तो के बाकी रैयग्यो?''

''मां, थारो अेक पोतो ई है बठै, दो बरस रो है। आ फोटू और देख!''

दादी आपरै पोतै नै देखतां ई फोटू में दिलीप रो चैरो मिलाण लागगी अर बोली, ''कांई ठा, थारा बापूजी अबै के कैवैला!''

''बापूजी नै म्हैं समझा लेसूं मां, पण तूं तो नाराज कोनी नीं?''

''बात तो नाराजगी री ई है बेटा, पण के करां? कीं कैवण जोगी ई कोनी छोडी तूं म्हनैं। थारा बापूजी रो नांव ई मटियामेट हो जासी। लै, अै थारा बापूजी ई आयग्या। जूतां री आवाज आवै है, अबै बारै चाल। बै आवतां ई कैवैला कै म्हैं घटैभर सारू बारै गयो हो अर अै दोनूं अजै अठै ई बैठ्या है।''

बापूजी आवतां ई बोल्या, ''कांई बतळावो हो आज इत्ती ताळ दोनूं जणा। आज रोटी रो कोई सरतंग कोनी के?''

''दिलीप थांरै सूं बात करणी चावै है। इण तो ब्यांव कर लियो बठै अमेरिका में ई। पोतै री फोटू दिखा बाबू थारै बापूजी नै...।''

''कांई?'' बापूजी नै इयां लाग्यो जाणै कानां मांय कोई तातो तेल गेर दियो हुवै अर करंट रा झटका-सा माथा में लाग्या हुवै।

''अरे नालायक! तन्नै ईं खातर अमेरिका भेज्यो हो कांई म्हैं। जद ई तूं पांच बरसां सूं अठै देस आयो है, म्हैं नौरा कर-कर थाकग्या। तूं तो थारो घर बसा राख्यो है बठै? तूं तो थारो पूरो जाब्तो कर मेल्यो है अर म्हैं अठै थारी धिंगाणै ई चिंता कर मेली हां।'' कैवता बापूजी अेक ठोलो बीं रै माथै में दे मारयो, ''कुण है छोरी? बेजात री है कांई?'' बै जोर सूं ललकारयो।

दिलीप मूंडो नीचै करयां धरती मांय आंख्यां गडा राखी ही। बापूजी घणा ई रोळा करया, पण आखिर करता ई कांई, जद आपरो खून ई बेइज्जती करावै तो दोस किणनै देवां? अब अै दोनूं तो अंगरेजी में गिटपिट करसी अर म्हैं होयग्या बूढा बरगद, कोई पूछ्यो न ताछ्यो, आपरै मत्तै ई हो रैयी है औलाद!

बापूजी फेर बकारयो, ''तो फेर अेकलो क्यां खातर आयो है ब्यांव में? पैलां ई बता देंवतो अर लेय आवतो थारै परिवार नै!''

''बापूजी, सागै ई ल्यायो हूं। डीडवाणै में म्हारै भायलै रै घरां है। थे कैवो तो अबार ई बठै जाय'र अठै लाडनूं लेय आवूं?''

मां सोच्यो, अबै तो पोतै रो ई मूंडो देख लेस्यां, सो मांयनै आय'र बोली, ''जावै क्यूं कोनी? बेगो-सो जा अर म्हारै पोतै रो मूंडो दिखा!''

''दिलीप री मां, तूं तो पोतै रो मूंडो देख लेवैगी, पण म्हैं गांववाळां नै कांई मूंडो दिखाऊंगो?'' दिलीप रा बापूजी माथै पर हाथ राख'र बैठग्या।

''भगवान की जियां मरजी हुवै, बियां हुयां ई सरै दिलीप रा बापूजी। गांव अर जात-बिरादरी कीं कैवै तो कैय दीजो कै सब भगवान री लीला है। आपां करण वाळा कुण होवां?''

आगलै दिन दिलीप आपरी घरवाळी अर टाबर नै लेय'र गांव आय पूग्यो। आपरी जोड़ायत नै मां-बापू रै पगां लागण रो कैयो तो बा दोनूं हाथां सूं पगां लागी। सासू रै पगां लाग्यां पछै पोतै नै सुसरै नै संभळा दियो। आपरै पोतै नै खोळै में देख'र दिलीप रा बापूजी रो पारो ई कीं नीचै उतरयो।

बास में लोग अटकळां लगाण लागग्या, पण दिलीप री मां ठाडै काळजै री ही। बा खड़ी होयी अर पोतै नै गोदयां लेय'र बारणै घुमावण सारू लेय आवती।

अेक दिन दिलीप रो बडोड़ो भाई बीं पर बरस पड़्यो, ''बारणै मूंडो दिखाण जोग कोनी छोड्यो तूं म्हांनै दिलीपिया! म्हारै सासरला कैवै कै अमेरिका में रैयोड़ी छोरी अठै थांरै सागै कियां रळसी? औ ब्यांव तो फेल होसी। न तो कोई रीत-रिवाज अर न ई कोई तीज-तिंवार देख्या है छोरी? कदैई आपणै अठै राजस्थान में रैयी कोनी। न ई बीं रा माईत कदैई आया अठै, औ कियांकलो ब्यांव है?''

''देखो भाईजी, म्हांनै तो अमेरिका में ईज रैवणो है। अै रीत-रिवाज अर तिंवार कुण करै है आजकाल? अर जद आपणै देस आवण रो काम पड़सी तो मां क्यां खातर है? बा आपरी बीनणी नै सगळा रीत-रिवाज सिखा देयसी। जलमतां ई तो कोई सीख'र कोनी आवै। म्हनैं अठै आयां नै पच्चीस दिन होयग्या है अर पांच दिन बाकी रैया है। मां कैयो है कै मनसा माता रै जाय'र आवो। फेर म्हांनै पाछो अमेरिका पूगणो है। अठै रैवां जित्तै तो कम सूं कम राजी-बाजी रैवां!'' दिलीप भाई नै समझायो।

''भाया! म्हैं तो राजी-बाजी ई हा थारै आयां सूं पैली, बेराजी तो अबै हां।'' भाईजी रो पारो कोनी उतर्‌यो तो दिलीप बांनै राजी करबा री गरज सूं बोल्यो, ''अरे भाईजी, जियां थे अमेरिका का टाई, जूता अर घड़ी पैरनै बाबू बणग्या बियां ई आ थांरी बीनणी भी राजस्थान रा पैराण पैहर लेसी अर तीज-तिंवार ई कर लेसी।''

अब भाईजी कांई बोलता। कोई उत्तर नीं देय सक्या तो मांयनै जाय'र सोयग्या।

महीनो तो इयां बीत्यो जाणै राजस्थान मांय बिरखा हुया करै। थोड़ी-सी छांट पड़ी, बेकळू री सौरम फूटी, तावड़ो पड़्यो अर रेतो पाछो सूकग्यो। दिलीप आपरी बहू अर बेटै नै लेय'र पाछो अमेरिका पूगग्यो हो। मन मांय थोड़ो दुख ई हो। आपरै माईतां नै दुखी कर्‌यां सूं दुख तो हरेक रै मन में उपजै ई है। पण सागै इण बात री खुशी भी ही कै बापूजी आपरै पोतै नै देख'र राजी तो हुया ई हा।

अबै छुट्टी रै दिन दिलीप आपरै माईतां नै वीडिओ कॉल कर्‌या करतो हो अर मां-बापूजी पोतै नै देख-देख बीं रै सागै अछन-अछन बतळावण कर'र घणा राजी हुंवता। अबै पोतो ई आपरै दादै-दादी सूं बात-बतळावण करतो थोड़ी-थोड़ी राजस्थानी बोलणी सीखग्यो हो। बहू विद्या ई आपरी सासू सूं पूछ'र कणैई गट्टां रो साग करती तो कणैई बाजरी रो खीचड़ो। दो बरस बीतग्या अर दिलीप री भाभी रै टाबर होयो। 'जळवा पूजन' री त्यारी करै हा, तो दिलीप ई आपरै परिवार नै लेय'र राजस्थान आपरै गांव लाडनूं आयो। सगळा रिश्तेदार अर सगा-परसंगी ई भेळा हुया। सगळा ई अमेरिका वाळी छोटकी बीनणी नै देखबा सारू उतावळा-बावळा हो रैया हा।

इत्तै में छोटकी बीनणी आई सोळै सिणगार कर्‌योड़ी। घाघरो-ओढणो अर कुरती-कांचळी पैर्‌योड़ी। माथै पर बोरलो। पगां में छड़ा। हाथां में लाख रा चुड़ला अर सौवणी मैंदी मांड्योड़ी। गांववाळा सोच्यो कै आ कोई गांव री ई बहू-बुआरी है। पण जद दिलीप री मां सै नै बतायो कै आ म्हारी छोटकी बीनणी है विद्या, तो लोगां नै आपरी आंख्यां माथै भरोसो ई कोनी रैयो कै आ दिलीप री अमेरिका वाळी बीनणी है।

कोई बूझ्यो, ''तेरो नांव कांई है?'' कोई बूझ्यो ''गांव कुणसो है तेरो?''

बा हंसती अर जित्ती मारवाड़ी सासू अर दिलीप सूं सीखी बित्ती बोलती, ''अबै तो म्हारो औ ईज गांव है।''

छोटकी बहू सगळा लोगां नै भोत सौवणी लागी। देखण में भी अर वैवार में भी। गांववाळा में चरचो फूटग्यो, ''भाई, दिलीप री बीनणी तो भोत फूटरी है, गोरी गणगौर सी। सजी-धजी अर बणी-ठणी।''

दिलीप रा बापूजी छाती चोड़ी कर'र बोल्या, ''म्हारो बेटो दिलीप लाखां में अेक है अर छोटकी बहू आखै अमेरिका में अेक।''

दिलीप री भाभी माथै पर ओढ्योड़ै पीळियै रै घूंघटै मांय दो आंगळ्यां घाल'र बीं

नै देखण लागी अर मन में सोच्यो कै द्योराणी इस्या सिणगार कर मेल्या है जियां आज ई ब्यांव कर'र आयी होवै। बा थोड़ीदार अेकटग बींनै देखती रैयी अर पछै बोली, '' आ अमेरिका तो सगळा सिणगार अर नेगचार ई जाणै है। इत्ता नेगचार तो आपणै अठै आळी छोरयां ई कोनी जाणै। अरे विद्या! आ तो बता कै तूं कठै सूं सीख्या अै सगळा नेगचार?''

विद्या होळैसीक हाथ हिलायो। मोबाइल फोन बेग मांय सूं काढ्यो अर बोली, ''गूगल है न, ईंनै म्हैं जिकी बात पूछूं, औ म्हनै मिनटां में ई बता देवै।''

''अरे म्हारी गूगल आळी द्योराणी। तूं तो बडी हुंसियार है।'' दिलीप री भाभी विद्या नै आपरै नैड़ी बुलाय'र कनै बैठाय ली।

द्योराणी-जेठाणी दोनूं सागी बैनां दांई अेकमेक होयगी ही।

◆◆

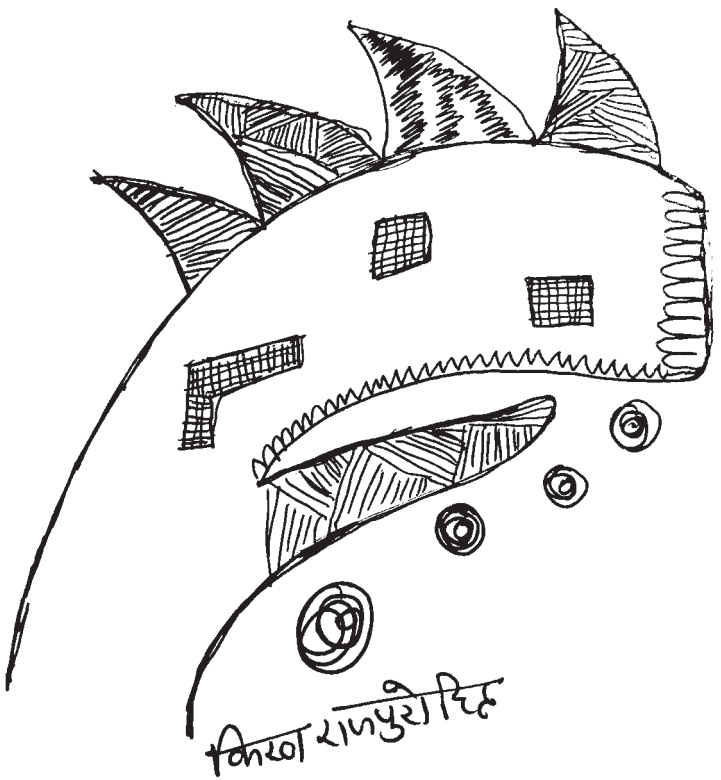

लघुकथा

ओम प्रकाश तँवर

रामजी करै सो आछो ई करै

लुगाई-मोट्यार दोनूं घरां बैठ्या आपस में बंतळ कर रैया हा। लुगाई बोली, ''रामजी करै सो आछौ ई करै।'' सुण'र रीसां बळतो मोट्यार बोल्यो, ''का तो थूं ई आछो करै अर का थारो रामजी। ईं संसार में थे दोय ई हुया हो आछा करणियां। म्हारी तो दोनूं टांग्यां टूटगी, माथै में च्यार-पांच टांका आयग्या अर लारलै अेक महीनै सूं मांचै में पड़्यो हूं अर थूं कैवै रामजी करै सो आछो ई करै। थनैं बातां बोळी आवै।''

लुगाई बोली, ''बातां के आवै है? म्हैं तो साची कैवूं। दुरघटणां में तो कीं व्है जको थोड़ो ईज व्है। आपरा तो दोनूं पग ई टूट्या, इत्तै में ई सरग्यो। नीं तो देखां हां कै दुरघटणा में तो आदमी री रीढ री हाडी तक टूट जावै। पछै उमर भर मांचो सेवै। आप ई दुख पावै अर ऊपरला ई हैरान हुय जावै।''

मोट्यार, ''हां, आ बात तो है।''

लुगाई, ''अेक बात और कैवूं। थे जे नराज नीं होवो?''

मोट्यार, ''कैय दे, थारी बात सूं म्हैं कदैई दोरो हुयो हो के?''

लुगाई, ''थे जे निरोगा हुंवता तो घरां मांचै पर सूत्या थोड़ाई रैवता?''

मोट्यार, ''घरां रैवणै रो तो सवाल ई कोनी।''

लुगाई, ''दिन ऊगतां रै साथै उठ'र सीधा ठेकै पर जावता। दारू में धुत हुय'र घरां बावड़ता। घर में आवतां ई गोधम घालता। गाळभेळ काढता। माराकूटो करता। न थे सुख सूं रोटी खावता अर

:: ठिकाणो ::
डी-213, अग्रसेन नगर
चूरू (राजस्थान)
मो. 9460565427

न दूजा नै खावण देंवता। आड़ोसी-पाड़ोसी आपरै डागळै चढ'र तमासो देखता। उणसूं तो आछो है कै मांचै पड़्या हो। पीड़ तो थे भोगो हो पण सांति सूं थे ई रोटी खावो अर म्हे भी सुख सूं दिन कटी करां। आ बात आछी कोनी के?''

मोट्यार, ''आं बातां रो कीं निवेड़ो नीं आवै। भींत घड़ी कानी देख, मेरै दवाई लेवणै रो बगत होयग्यो। म्हनैं गोळी दे अर पछै चोखी-सीक चाय बणा'र पा।''

घणी गई, थोड़ी रैयी

भैरो जद गाय-बाछी नै लेय'र खेत नै व्हीर हुवण लाग्यो तो उणरी जोड़ायत सुखी बोली, ''थे अबै खेत जाय ई बोकरसो के? सत्तर तो पार कर लिन्हा और कित्ताक बरस तांई भागता रैस्यो?''

सुण'र भैरो बोल्यो, ''कानै री मां, थनै ठाह कै म्हैं तो म्हारी जिंदगी में सदा ई काम करयो है। पछै अबै कित्ताक दिनां री बात है? अबै तो घणी गई अर थोड़ी रैयी है। आपां तो नदी रै किनारै रा जूना दरखत हां। के ठाह लागै, कणां राम रै घरां रो बुलावो आ जावै।''

सुखी, ''बात तो थांरी साची है, पण थांरा हट्टा-कट्टा जवान छोरा घरां बैठ्या रोट तोड़ै, ठाला बैठ्या थूक बिलोवै अर थे अेकला दिनूगै सूं सिंझ्यां तांई खेत में पच्चो आ कोई चोखी बात है के? पछै बै कणां काम करसी?''

भैरो, ''उणां रै काम करण सारू तो जिंदगी आगै ई घणी पड़ी है। अबार तो उणां रै खावणै-पीवणै, खेलणै-कूदणै अर मौज-मस्ती करणै रा दिन है। बिचार कर कानै री मां, म्हारली काया के काम आसी? के ईं रा लाव-जेवड़ा बणसी? अबार जित्तो ई काया सूं काम लेयसूं, सो म्हारो। मांचो पकड़्यां पछै के है? म्हनैं काम करणै रो मौको मिल्यो है। ईं वास्तै अबार काम करकै म्हारै मन री काढल्यूं। पछै अै जाणै अर आंरो काम जाणै। करसी तो आछी बात, नीं करसी तो अै जाणै। आपां तो देखण नै आवां कोनी।''

सुखी, ''थांनै तो कैवूं जदै थे तो सदा ई इसी बात ई करो।''

भैरो, ''थूं घणी चिंत्या मती करिया कर। अबार तो म्हैं चालूं। पछै फुरसत में बैठ'र आपां बतळास्यां।'' इत्तो कैय'र भैरो खेत कानी टुरग्यो।

सासू रो हीड़ो

जियां ई सरिता आपरै पीहर में जाय'र मां कनै बैठी, मां बोली, ''बेटा, म्हैं थनैं फोन करियो हो नीं कै म्हनैं डाकदर नै दिखाय'र दवाई दिरा दीन्ही है। म्हारै मौसमी बुखार

है। कोई खास बात कोनी। दस दिनां पैली आय'र म्हारै सूं मिल'र गई ही। पछै थूं अबै क्यूं आई, क्यूं फोड़ा भोग्या, बेटा?''

सरिता, ''इणमें क्यांरा फोड़ा है, मां? म्हारै सासरै सूं अठै तांई री सीधी बस है। दोय घंटा रो गेलो है। दिनूगै सात बज्यां बस में बैठी ही अर नौ बजे तो अठै पूगगी।''

मां, ''मानी दोय घंटा रो ई गेलो है। पण टाबरां री पढाई खोटी व्है। कंवरजी री ड्यूटी में खलल पड़ै। रोट्यां रा फोड़ा पड़ै।''

सरिता, ''फोड़ा इयां ई पड़ता रैवै। काल भोजाई सूं फोन पर बात करी जदै भोजाई बतायो कै थांरी सरधा कोनी तदै म्हां सूं रैयो नीं गियो। म्हैं तो रात नै ई आवै ही, पण थारा जंवाई रात नै अस्पताळ सूं मोड़ा बावड़्या, जदै बै बोल्या दिनूगै पैली बस सूं चली जाई।''

मां फिकर करती पूछ्यो,''जंवाई अस्पताळ क्यूं गया हा? उणां रै कोई अबखाई व्हैगी ही?''

सरिता, ''उणां रै कोई अबखाई नीं ही।''

मां, ''तो पछै बै अस्पताळ क्यूं गिया हा?''

सरिता, ''अरे म्हारी सासू रै घड़ी रो उठाव व्हैग्यो हो अर सांस लेवणै में थोड़ी दोयाई ही। जदै बतावै हा कै सासू नै डाकदर नै दिखाय'र अस्पताळ में भरती करवाणो पड़्यो।''

मां, ''अबै कियां है?''

सरिता, ''ठीक ही व्हैली। म्हैं तो कोनी पूछ्यो कियां है।''

सासू मां नै जूस रो गिलास पकड़ावती भोजाई सुमन बूझ्यो,''तो बाईसा, थे थांरी सासूजी कनै अस्पताळ में नीं रैया?''

सरिता मूंडो बिचकाय'र बोली, ''म्हारी देराणी जाणै अर सासू जाणै। म्हैं तो कैय दीन्हो, म्हारै सूं ना तो कोई सासू रो हीड़ो व्है अर ना ई म्हनैं कोई सासू री खीर खावणी।''

सुण'र मां बोली, ''सरिता, थारी सासू रै दोय बहुवां है। अेक नटै तो दूजी हीड़ो करै, पण थारी मां रै तो अेक ही बहू है अर वा जदै थांरी तरियां नाटज्या तो थांरी मां में कांई बीतै? उणनै पाणी रो गिलास कुण पकड़ावै?''

सुण'र सरिता जमीं कुचरण लागगी।

◆◆

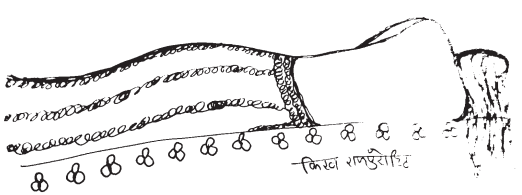

 ISSN : 2320-0995

ललित शर्मा

साचो फुठरापो

अेक गांव में केई लुगायां खेतां में काम करयां पछै थोड़ो आराम करती। आराम री टैम में सगळी जण्यां कुवै कनै बैठती अर सज-धज'र आपरै रूप-रंग री बातां में बावळी होय जावती। काच ई आपरै सागै राखती अर अपणै आपनै निरखती रैवती। बै सगळी आप-आपरै रंगरूप माथै अणूतो नाज करती अर पोमीजती रैवती। अबै तो औ कुवो लुगायां री हथाई रो नेगम ठायो बणग्यो। काम निवड़्यां पछै बातां रा पापड़ बटण नै अठै बैठ जावती। अेक बात मांय खास ही कै बै सगळी घणै हेत-हिंवळास सूं सागै रैवती। बातां-बातां में कैवती रैवती कै हे भगवान! म्हारी बिरादरी नै साजी-ताजी अर राती-माती राख्या।

बां लुगायां मांय सूं अेक भी किणी दूजी लुगाई नै भूंडी-माड़ी नीं बतावती, जिणसूं उणां मांय प्रेमभाव बण्यो रैवतो। मनमुटाव री नौबत ई नीं आवती। पण अेक दिन बै लुगायां बातां करती-करती तूं-तूं, मैं-मैं पर उतर आयी, जिणसूं उणां बिचाळै मनमुटाव री स्थिति बणगी। बां मांय सूं केइयां में इण मनमुटाव नै कम करण री भावना जागी। बां मांय सूं अेक बोली, ''देखो बाई, इयां तो आपणै प्रेमभाव पर पाणी फिर जासी। पण दूजी लुगायां इण बात नै मानण सारू त्यार ई नीं ही। लुगायां में रंगरूप नै लेय'र आपसरी में शीतजुध सरू हुयग्यो।

छेवट निरणै औ करीज्यो कै आपां रै इण झोड़ रो निवेड़ो बूढी-बडेरयां करसी। उणी बगत कुवै कनै सूं अेक नब्बेक बरसां री डोकरी जावै ही। बींनै आंख्यां सूं कम सूझतो अर लाठी रै ठोकै सूं होळै-होळै बींद पगल्या बैवै ही। लुगायां रै जचगी कै आपां

:: ठिकाणो ::
Borpukhari Road
Khalihamari
DIBRUGARH
(Assam) 786001
मो. 9435032650

आपणी बात रो निस्तारो इण डोकरी सूं ईज कराय लेवां। डोकरी केई बसंत देख्या है, इणरै अनुभव रो तजरबो ई खासो लागै।

डोकरी जद नैड़ी पूगी तो लुगायां बींनै पकड़'र आपरै कनै लेय आयी अर अेक लुगाई बोली, ''माजी, थे म्हांरो फैसलो करो। थांनै औ बतावणो पड़सी कै म्हारै मांय सूं रूप री रंभा कुण है ? कुण थांनै इंदर री परी सी लागै।''

डोकरी बोली, ''म्हैं तो बाई, रोटी-पाणी रै जुगाड़ में डोलूं हूं। पैली म्हनैं ठंडो पाणी पावो अर पछै जिमाओ जणै ई कोई बात बणै।''

डोकरी री बात सुण'र लुगायां बिफरगी अर बोली, ''ल्यो करलो बात, पैली ईं रा हीड़ा करो। कुण करै थांरा हीड़ा। म्हे तो देख्यो बूढा माजी है, अनुभवी है जको म्हारो झोड़ निपटासी, पण आ डोकरड़ी तो मिनक्यां री लड़ाई में बांदरी बणनी चावै। माजी ! बांदरा किणी और नै बणाया। नीं बतावणो व्है तो थांरो रस्तो नापो !''

बापड़ी डोकरी चुपचाप आगै चाल पड़ी। बां लुगायां मांय सूं अेक लुगाई मजूरी करती ही। बा आपरो टिफण सागै लेय'र आयी ही। बा डोकरी लारै सूं डोकरी कनै पूगी अर कैयो, ''माजी, म्हारै कनै टिफण है, इणमें मोकळी रोट्यां है। थे जीमलो। थारै जिसा माईतां रो आसीरवाद पड़्यो कठै है ? भगवान औ मौको दियो है तो थासूं दो बात सीखण नै ई मिलसी।''

डोकरी टिफण मांय सूं रोटी-सब्जी लेय'र रंज'र जीमी। बीं मजूरण लुगाई नै मोकळी आसीसां दी, ''दूधां न्हावो, पूतां फळो।'' बा लुगाई टिफण री बच्योड़ी रोटी खाई अर काम सारू आपरै कारखानै जावण नै ब्हीर हायेगी। अबै जीम-जूठ'र डोकरी ई पाछी घर कांनी मुड़ी। डोकरी जावती-जावती बां लुगायां नै सुणावती कैयो, ''रूप-रंग रो कांई चाटणो है ! रूप-रंग सूं मोह करणो कीं काम रो कोनी लाडी। घर-गिरस्थी में काम प्यारो है, चाम कोनी। सोवणो रूप तो बींरो ई बाजै जीं रै मन मांय सगळा करम, सगळा विचार, सगळी सोच अर सगळा भाव दुनियां सारू चोखा हुवै। रंग रो कांई है, का गोरो अर का काळो ! लुगाई में लूण-लखण हुवणा चाईजै। थे अठै बैठ'र थांरै रूप-रंग नै रोवो अर अबै अेक-दूसरी सूं दुखी हुवो हो। घरै जाय'र काम क्यूं नीं लागो ?''

डोकरी री बात सुण'र सगळी लुगायां लजखाणी पड़गी। बै मन मांय सोचण लागगी कै सगळो संसार काल्पनिक सुंदरता में उळझ्योड़ो है। आपां वास्तविक भाव-विचार अर करम सूं सुंदर बणां तो कीं बात बणै। मन, विचार अर करम ई मिनख रो फुठरापो हुया करै। उण दिन सूं सगळी लुगायां कुवै पर हथाई तो जरूर करती, पण रूप-रंग री चरचा बंद होयगी। डोकरी रो वचन बां सारू रामबाण बणग्यो हो।

◆◆

ओम नागर

बगत को पंखो

सूरज तो हमेस ई तपतो रह्यो
उन्हाळा कै दिनां
अर अमूझा का दिनां बी
डी'ल सूं हमेस चूवता रह्यो पसीनो

पण पंखा कांई आया
जातो रह्यो बीजणी सूं बा'ळ उडाती
नुयी कोराणी की नरम कळाई को दरद

न्हं तो बापड़ी
वां तांई उडाती रेवै छी बीजणी सूं बा'ळ
ज्यां तांई पीवजी-थाळ में परोस्यो भोजन
पेट न्हं चल्यो जावै

गरीब-गुरबां की मूठी में बीजणी
पण
राजाजी कै हमेस पंखा ई ढळ्यां
पंखा / लूंठी झालरदार बीजणी

विज्ञान आयो तो
मिटग्यो राजा अर प्रजा को आंतरो
कोई बी बाप
आपणी लाडली की बिदाई में देबो

:: ठिकाणो ::
फ्लैट नं. 401, सी-5
'श्रीनिधि' कांचनपुष्प
कॉम्पलेक्स, घोड़बंदर
रोड, ठाणे (पश्चिम)
महाराष्ट्र-400615
मो. 9460677638

कदी न्हं भूल्यो
घणी सारी आसीस कै लैर डायजै
च्यार पांखड़्यां हाळो पंखो

स्हैर में
जीं कमरा में रह'र करी पढाई
वूं कमरा की छत पै
सबसूं पैल्यां पंखो ई टांग्यो
गांव बी दातार सबसूं पैल्यां
स्कूल में पंखां देय'र ई बण्यो

आज भल्यांई
बीततो जा रह्यो होवै
पंखा को जमानो
पण जद बी डगमग फरती देखूं छूं
पुराणा पंखा की पांखड़्यां
सुणूं छूं चूं-चूं करता बेरिंग की खट-खट
तो लागै
पंखा की पांखड़्यां न्हं हो'र
बगत का पांखड़ा छै
जो हाल रह्या चाल रह्या छै
डग-डग, डग-डग।

थां बी कदी सुणज्यो!
बेरिंग की खट-खट
बगत का खोटक्यां की
पड़ जावैगी तोल।

कविता-मीठो मून

कविता
बगत-ठूंठ-फूटी
दो नुयी तीत्यां
नंदी कराड़ै बंधी
अेक जूनी नाव
समदरतट आती-जाती
कोई हलोळ
सरवर पाळ ऊभी
कोई बिरहण

कविता
गळो फंसा जळ ढोती
लोठ्यो-डोर

कविता
खुंची आंख पै कसूनो
तातो फूंबो
अंधैरै सहचन्नण करतो
बूढो चांद
सूरज साम्हीं बळतो
कोई दीमस्यो
चूल्हा-रांवै झगझगतो
कोई अंगीरो

कविता
पगथळ्यां-कांटों उकसातो
सुईं-चींप्यो
कविता
थारै-म्हारै बीचै बतळाक, मीठो मून।

◆◆

ISSN : 2320-0995

पुनीत रंगा

सांचै में ढाळ लै

जे आज री दुनिया मांय
सफळ हुवणो है तो
मिनखपणै नै कुचळ'र
बस, माटी बणा लै
कंवळी-लचीली माटी
जिणनै
जोकर सूं लेय'र जहाँपना तांई
मूरख सूं लेय'र मंत्री तांई
चमचै सूं लेय'र चीफ तांई
हर सांचै मांय
सरलता सूं
ढाळी जा सकै।

आसा रा फूल

म्हारै जीवण रै
दरखत माथै
जद-जद ई खिल्या है
आसा रा फूल
भार सूं डाळ
लचक जावै
फूल कांई
कळी-कळी तक
झर जावै है।

:: ठिकाणो ::
रंगा कोठी
सुकमलायतन
मुरलीधर व्यास नगर
बीकानेर (राज.)
मो. 9829138001

सूखो मरुस्थळ

सौरो हुवै है
बारै रो जुध लड़णो
पण दौरो हुवै है
मांय रो महाभारत लड़णो
मिनख जुगां सूं जूझ रैयो है
बारै रै अकाळ सूं
पण आज बो
मांयलै तिरकाळ सूं
टूट रैयो है
हवळै-हवळै सूखता जा रैया है
संवेदणा रा सैंग सरवर
प्रेम रा पिणघट
हेत री इमरत तळायां
आंसुवां री गंगा-जमुना
करुणा री कावेरी
दया रा दरिया
सहानुभूति री धारावां
अहिंसा रो इमरत-कुंड आद नै
हवळै-हवळै
मिनख बणतो जा रैयो है
सूखो मरुस्थळ
सिळगतो मरुस्थळ
अेक दिन औ संसार
बण जावैला महा मरुस्थळ
जठै हुवैला
फगत रेत-रेत
रेत-ई-रेत
जठै नीं मिलैला
पाणी री
अेक बूंद तकात भी।

कूंत

तरास्योड़ो नगीनो
हजारां में बिक्यो-
पण
तरासण वाळै री
साची कीमत
फूटी कोडी नीं आंकीजी

उणरी सही कीमत
नीं तो
घिसवावण वाळै जाणी
नीं ही खरीदण वाळै परखी
अर नीं ही
खुद री कीमत माथै
अणूतो इतरावण वाळै
खुद नगीनै ई समझी।

तिरस-आस

म्हारी जिंदगी नै मिली है
फगत पहाड़ी बरसात
परबती धूप
पण उणनै चाईजै
घणघोर बरखा
थितू धूप
जिकी
बुझा सकै
जीवण री तिरस
अंकुरित कर सकै
हिवड़ै री आस।
◆◆

ISSN : 2320-0995

गजल

आशा पाण्डेय ओझा 'आशा'

(अेक)

घोर अंधारो च्यारां कानी
अजब निजारो च्यारां कानी

पसर गयो रे बैर भरूंटचो
थारो-म्हारो च्यारां कानी

मीठी फसलां बीती बातां
पाणी खारो च्यारां कानी

जूणां काटै लोग-लुगाई
सांसा भारो च्यारां कानी

छिंयां वाळा रूंख कट्या सब
चाल्यो आरो च्यारां कानी

ठीमर-ठावा लोग कठै अब
अकलां गारो च्यारां कानी

निजरां लागी किण री 'आशा'
जोय उतारो च्यारां कांनी

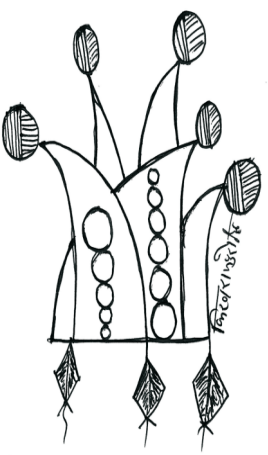

:: ठिकाणो ::
सविना थाणै वाळी गळी
31, न्यू वर्मा कॉलोनी
हिरण मगरी सेक्टर 9
उदयपुर-343001
मो. 7597199995

(दो)

मिनख जमारो खोटो भाई
इणमें सुख रो टोटो भाई

धंधा-पाणी मोळा माटा
बैठा बातां घोटो भाई

धिन भागी हो जे मिल जावै
काचो-पाको रोटो भाई

कुण देवै है किणरै खीरा
खुद बाटियो ओटो भाई।

कागज री है पुरसण सगळी
गमग्या थाळी-लोटो भाई

कुण बांचै जो 'आशा' लिख्यो
सगळा जोवै फोटो भाई

(तीन)

मायड़ बोली मीठी लागै
इणमें मिसरी घुळती लागै

हिवड़ो है पड़दादी रो आ
दादोजी नै बाल्ही लागै

मोती लागै इणरा आखर
बोली सोना जैड़ी लागै

मनुहारां सूं भरी थकी आ
इमरत री आ सीसी लागै

कूक-कूक नै कोयलड़ी भी
इण बोली में गाती लागै

इण बोली में बोल्या राणा
आ मीरां री थाती लागै

बास-बसी है इणरी अंतस
आ फूलां री घाटी लागै

उणियारो है आपां रो आ
सांसा मांही रमती लागै

इणरै बिन हां गूंगा आपां
आ आपां री वाणी लागै

ओळख है 'आशा' री आ
पण आ ओळख गमती लागै

◆◆

ISSN : 2320-0995

डॉ. प्रियंका भट्ट

थूं बरस छमाछम जाजे अे!

अे काळी बादळी, आजे अे!
गरड़ गरड़ गड़ गरजण करती, थूं बरस छमाछम जाजे अे!

ताळ बावड़ी सूखा, सूणी नदियां रा तीर-पाळ
सावण भादो तरस-तरसग्या, तरस्या जेठ असाढ़
नदियां तर करती जाजे अे, बावड़ीया भरती जाजे अे!
तीर-पाळा, रौनक मेळा नै, थूं बरस छमाछम जाजे अे!

प्यासा पंछी नैण आस धर, आभो तकै दिन- रात
सांवरिया जू वईनै सांवळा, बरसो छम-छम आज
पंछी री प्यास बुझा जे अे, घणघोर घटा बरसा जे अे
नैणां री आस बंधावा नै, थूं बरस छमाछम जाजे अे!

फसल कदी री वाट नाळती, ताप सूं पड़ी निढाल
झमाट झम-झम बरस-बरस नै, कर दे इण ने निहाल
खेतां में अन्न उपजावां नै, खलिहानां भरती जाजे अै
किरसाणां भाग जगावा नै, थूं बरस छमाछम जाजे अे!

अस्यो कांई कर्‌यो म्हैं कसूर ?

बाळपणै में म्हांनै क्यूं परणाई
काची कळी कुम्हळाता, लाज क्यूं नी आई
कियां किधी थे अपणां सूं दूर
अे मायड़ म्हारी, अस्यो कांई कर्‌यो म्हैं कसूर ?

:: ठिकाणो ::
डी-7 'मांगल्य'
हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी
हिरन मगरी, सेक्टर 5
मनवा खेड़ा रोड
उदयपुर-313001
मो. 9468967674

म्हैं काळजा री कटको थारी, घणी थनैं ही वाल्ही
जलम पै म्हारै डागळियै चढ, घणी वजाई थाळी
कियां व्हैगी थूं पछै मजबूर
अे मायड़ म्हारी, अस्यो कांई करयो म्हैं कसूर ?

नाना-मोटा सुपना जै हा, इण आंख्यां रा म्हारा
नाम कमाई थारो, म्हैं तो मान बधावां थारा
पल्लै बांधतै ई व्हैग्या चूर-चूर
अे मायड़ म्हारी, अस्यो कांई करयो म्हैं कसूर ?

असी आखातीज, जाणै कणी ही वणाई
ढूला-ढूली जाण, क्यूं दीधी थूं परणाई
आगा बळवा देता अै दस्तूर
अे मायड़ म्हारी, अस्यो कांई करयो म्हैं कसूर ?

ढोला बेगो आईजै रे

कूक-कूक नै कोयलड़ी, मचावै घणो सोर
हूक उठी हिवड़ै म्हारै, ना जाणै कोई और
ढोला वेगो आईजै रे, सावण आयो चितचोर

गरज-गरज नै बादळी, चमक रही चहुंओर
नेह जतावण नै बादळिया, बरसै है घणघोर
प्रेम री बरखा में मनड़ो भिगावणै
ढोला वेगो आईजै रे, सावण आयो चितचोर

सावण रा झूला झूलै, गोरणी साथै गौर
मेळा में जाकर कै लावै, चुड़लो रखड़ी बोर
देखनै मन म्हारो लागै है छिजावणै
ढोला वेगो आईजै रे, सावण आयो चितचोर

झरमर झरमर बरस-बरस, तरगी आंख्यां री कोर
बिरह दझावण लाग्यो जोबन, व्हैग्यो सूको थोर
मनड़ै नै हरयो-भरयो कर हरखावणै
ढोला वेगो आईजै रे, सावण आयो चितचोर

◆◆

 ISSN : 2320-0995

मंजु शर्मा जांगिड़ 'मनी'

गाजण लागी बादळी

बिरखा उमटी है घणी, देखो च्यारूंमेर।
उमड़-घुमड़ नै आयगी, घड़ी करी नीं देर।।
इंदर राजा मेर करो, मरुधर म्हारो देस।
मेह रो साच राखजो, धान हुवै हरमेस।।
घुरावै है जोर घणो, औ काळजो कंपाय।
काट खावै आ बिजळी, सांसा ई मूंडै आय।।
घोर अंधियारो करियो, जाणै गहरी रात।
दिन दोपहर सूरज नै, कैड़ी दी है मात।।
छांटा आयी जोर री, पड़ण लागी पनाळ।
पीवण नै पाणी घणो, बांधो इणरी पाळ।।
गाजण लागी बादळी, जे बरसै थूं जोर।
मिनखां रै हो जायला, इणी जमारै ठौर।।
पळका पाड़ै बीजळी, देखो च्यारूंमेर।
डरण लाग्यो मानखो, अबकै नीं है खैर।।
आभै चढ आयी घणी, बादळियां री फौज।
मेह बरसियो जोर तो, हो जावैला मौज।।
काळी-काळी बादळी, घालै घेर घुमेर।
घोर घोर गरजै घणी, रैय-रैयनै फेर।।
छोटा-मोटा बादळा, सूरज नै दे मात।
आडा फिरै सूरज रै, छिन लेवै है पात।।
करसो ऊभो खेत में, जोय मेह री बाट।
जोर बरसजै देवता, हो जावैला ठाट।।

:: ठिकाणो ::
14, मनी विल्ला
एक्सटेंसन स्कीम
न्यू पाली रोड, जोधपुर
(राज.) 342005
मो. 9414128465

काळी-काळी बादळी, सूरज नै ली घेर।
बारी है म्हारी अबै, रोज फिरै चौफेर।।
खेता री बांधी मेड़, मूंगा मोती धान।
करसां रै मेहनत री, मूंगी है आ शान।।
खेत में मोती निपजै, करसां रै ई पाण।
मोटा घणा मिनख जदी, सोवै खूंटी ताण।।
पीळो घणो खेत हुयो, जागी हिवड़ै आस।
अबकै बरस तो मिनखां, आयो घणोई रास।।
जग रो पाळणहार है, करै जगत रुखाळ।
जाणै है ईश्वर ही, उण रा जीवण हाल।।
कुंआ तालाब बावड़ी, तिरिया तिरिया नीर।
लिखियो लिखियो मानखा, मिल जावैला क्षीर।।
जग री रखवाळी करै, करसो दौड़ै दौड़।
रात-दिन वो अेक करै, मेहनत री न होड़।।
इण धरती री गोद में, खेलै जीव अपार।
लाड लडावै वसुंधरा, छेह ना कोई पार।।
मेह बरस रैयो घणो, धरती करै गुहार।
इंदर राजा मेर करो, और न खाओ खार।।
मधरो-मधरो बायरो, सागै पड़ै फुहार।
सावण आयो हे सखी, करै घणी मनुहार
सावण घटा घन ऊमड़ी, देखो च्यारूंमेर।
इंदर राजा मेर करो, जनमानस री खैर।।
सावण री लागी झड़ी, रुकै ना मेह छांट।
राजा इन्दर राज में, अबकै होसी ठाट।।
हरी-भरी आ वसुंधरा, मन नै लेवे मोह।
हिवड़ो जावै हरखियो, लेता जावो टोह।।
हिवड़ो जावै हरखियो, आयो सावण मास।
इंदर राजा मेह करो, जग नै आवै रास।।

◆◆

 ISSN : 2320-0995

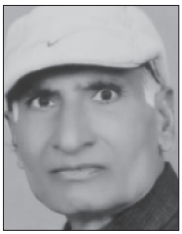

निशांत

अेक मजूर री दुरगत

आज बजार में म्हैं अेक मजूर देख्यो। सिंझया रो टैम हो। म्हैं घूम'र आवै हो। बो मेरै आगै-आगै बगै हो। बो मधरै सै कद रो हो। बीं रा मोढ़ा अर कड़तू पतळा हा, पण बीं री नाळो बांधण आळी जग्यां ठाडी ही। बेहद ठाडी! इयां लागै हो जाणै बिण पजामै रै नाळियै में कीं बाध राख्यो है। ईं सूं बो घणो बेडोळो लागै हो। बीं रा गाभा-लत्ता मैला हा। बीं रो पगड़ियो दो-तीन हाथ रो हो अर बांधेड़ो भी ढंगसर नीं हो। बो खुणी कनै सूं आपरै अेक हाथ नै बरोबर कुचरै हो। जरूर बीं रै खाज ही। होणी ई ही, क्यूंकै बो म्हनैं केई दिनां सूं न्हायेड़ो नीं लागै हो। जे न्हायो ई होसी तो बिना साबण-तेल रै। बीं पर तरस खाय'र म्हैं बीं सूं पूछ्यो, ''तेरै ढुंगरै आळी जग्यां इत्ती ठाडी कियां है?''

बण बतायो, ''चेजै पर काम करती बगत मेरै पर केई ईंटां आ पड़ी ही। जद सूं ई आ जग्यां सूजेड़ी हे। इलाज सूं ठीक नीं होई। बस लियां फिरूं। सरस्यूं काट'र आयो हूं।''

बीं रा हाल जाण'र म्हैं सोचै हो कै देस नै बणावण में अेक मजूर रो कित्तो बडो हाथ होवै। इंजीनियर अर बडा अेलकार तो नक्सो बणा'र दे देवै। काम तो मजूर ई करै। पण बींनै संभाळण रो काम देस-समाज कित्तो'क करै? सरकार आपरै कर्मचारियां पर कित्तो खरच करै, पण आं मजूरां नै राम भरोसै छोड राख्या है।

भगतसिंघ : अेक दारसनिक

अेक खास किस्म रै लोगां भगतसिंघ नै सिरफ अर सिरफ बंदूक री खेती करणियो , अंगरेजां नै मारणियो बणा राख्यो है, जदकै आ

:: ठिकाणो ::
वार्ड-6, निकट वन विभाग
पीलीबंगा-335803
जिला-हनुमानगढ़ (राज.)
मो. 8104473197

ISSN : 2320-0995

बात नीं है । बां सारू क्रांति सिरफ गोरां नै मार'र भजावण तांई नीं ही। बै देस-समाज रै लोगां रै मगज में क्रांति यानी बदळाव ल्याणो चावै हा। बै जाणता कै अेक दिन अंग्रेज तो चल्या जावैगा, पण अठैली काळी चामड़ी आळा अंग्रेज अठै रै गरीब तबकै नै बाढ-बाढ'र खावैला। ईं आडी बाड़ देणी भी इत्ती ई जरूरी है जित्ति कै अंग्रेजां नै बारै काढणा। यानी बै अेक क्रांतिकारी रै सागै-सागै अेक भोत बडा दार्सनिक हा। बांरी ईं सोच रो विकसाव करण आळा हा—कार्ल मार्क्स अर लेलिन। भगतसिंघ आपरै विचारां नै फैलावण सारू भोत सारो लिख्यो, पण भणावण आळां औ भणायो कै भगतसिंघ बंदूक चलावणिया हा अर अंग्रेज बां सूं डरता, जदकै अंग्रेज बांरी बंदूक सूं नीं, बांरै विचारां सूं डरता ।

बै कार्ल मार्क्स दांई जाणता हा कै लोगां नै खास कर'र मजूरां नै मूरख बणाये राखण में धरम रो भोत बडो हाथ होवै। ईं वास्तै बै पूरा नास्तिक बणग्या। बै हद सूं जादा नास्तिक हा । ईं बात रो प्रमाण औ है कै जद बै लाहौर जेळ में बंद हा अर बांनै अेक-दो दिन पछै फांसी टूटण आळी ही तो जेळ रै गुरुद्वारै आळो भाई बां कनै आय'र कैयो, ''भगतसिंघ जी, थे सारी उमर अरदास नीं करी, अब आखरी वेळा में तो अरदास करल्यो!''

अेक इंसानी तौर पर भगतसिंघ बीं भाई रो बडो आदर-मान राखता। ईं वास्तै बां बांनै घणै लाड सूं समझायो कै थारी अरज अंगेजतो, जे म्हैं अरदास कर लेस्यूं तो लोग कैवैगा कै सारी उमर तो नास्तिक बण्यो रैयो अर आखरी वेळा भगवान सूं डर'र अरदास करली। ईं वास्तै म्हनैं थे माफ करियो। बै चरित्र रा धणी हा। कायरपणो बां में जाबक नीं हो। बांनै ठा हो कै बडी जल्दी फांसी टूट जाणी है तो भी बै लेलिन नै पढता रैया।

बां अेक बडो सारो लेख लिख्यो—'म्हैं नास्तिक क्यूं'। औ लेख दुनियां रै हर मिनख नै पढणो चाईजै, पण पढै कियां? बांरै विचारां रा विरोधी नीं चावै कै औ पढ्यो जावै। बांरै बारै में औ कीं ई पढायो जावै कै बै सिरफ देस खातर मरण-मारणिया मिनख हा। बां आपरी कारगुजारियां सूं लोगां नै जुल्म रै साम्हीं लड़नो सिखायो। बै वैग्यानिक दृष्टिकोण रा धणी हा, पण बां सूं खार खावणिया लोगां री कोसिस रैयी कै बांरा विचार मर जावणा चाईजै। ईं वास्तै बां, बांरी क्रांतिकारिता रा भोत गीत गाया। बांनै अेक महान क्रांतिकारी थरप नाख्या। ईं सूं बत्ती बांरै सारू कठैई कीं नीं लिखीज्यो अर ना पढाईज्यो। बांरी दारसनिकता कठैई नीं बखाणीजी। तथागत भगवान बुद्ध अेक जग्यां कैयो है, ''किणी री सीखां अर संघरस नै धूड़ में रळावणो होवै तद उणरी मूरत बणाय'र मिंदर मांय थरप द्यो।''

...तो बां लोगां तो जग्यां-जग्यां बांरी फोटुआं टांग राखी है। बै के सोचता अर कांई करता, औ किन्नैई ठा नीं है।

आम आतमा-खास आतमा

बियां तो आतमा नै परमातमा कैयीजै, पण सारी आतमा परमातमा जैड़ी नीं होवै। अेक आम आदमी अर खास आदमी री आतमा में घणो फरक होवै। आम आदमी री आतमा घणी दयालू होवै, बठै ई खास आदमी री आतमा करड़ी होवै । इयां कर'र आपां आतमा रा भी ई गद्य रै सिरैनामै मुजब दो भेद कर सकां—आम आतमा अर खास आतमा। ई बात नै चरूड़ी करण सारू म्हैं आपनै अेक द्रिस्टांत देवूं।

म्हारै गामां कानी अेक गाम में अेक आदमी सूं अेक्सीडेंट मांय अेक आदमी मारीजग्यो। मरण आळो आदमी बीं रै गाम रो ई हो। बो घणो गरीब हो। मारण आळै री आतमा पिछतावै सूं भरीजगी। बण आपरो पिछतावो लोगां साम्हीं परगट्यो। लोगां बींनै कैयो कै भई, तेरै जादा ई पिछतावो है तो तूं मरण आळै रै टाबरां री कीं मदद करदै। दो बीघा जमीनड़ी बांरै नाम करा दै, पण मारण आळै री आतमा नीं मानी। बण सोच्यो, मदद सूं किस्यो बांरो आदमी पाछो आ जासी ? म्हैं तो हत्यारो हूं। म्हनैं जीण रो अधिकार नीं है। आ सोच'र बण तो स्प्रे पी ली अर मरग्यो। आ तो ही अेक आम आतमा री कहाणी।

खास आतमा री कहाणी तो थे सुण ही राखी है। अजय मिश्रा रै बेटै आशीष मिश्रा री। खास आदमियां री आतमा तो फेर खास ई होवै। लखीमपुर खीरी में आशीष मिश्रा आपरी कार धरणै माथै बैठ्या किसानां पर चढा दी। च्यार किसान फौत होयग्या। पिछतावै री जग्यां बो तो कानूनां रै हाथां भी नीं पड़्यो। बीं री आतमा कैवती लागी, ''ल्यो करल्यो मेरो कीं खांगो करो तो ?'' सुप्रीम कोर्ट बींनै सरत राख'र जमानत दी, पण बण तो बै सरतां भी नीं मानी। कोर्ट री नीं सुणणियो, आतमा री तो सुणै ई के हो ? इस्यै आदमियां री आतमा स्यात होवै ई नीं अर होवै तो मरेड़ी होवै। इस्यै लोगां री गिणती आपणै देस में भोत बधगी है। बडै-बडै ओहदां माथै बैठ्या अेलकार गळत काम करै ! नेतावां रै गोडां हाथ लगावै ! पखपात करै।

◆◆

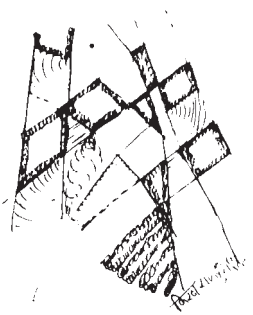

हरिचरण अहरवाल 'निर्दोष'

पांवणा

बात जब की छै, जब म्हां पगां-पगां चौथ माता कै बरवाड़ा जा रया छा। म्हूं छो, रघुवीर छो अर बृजराज छो। पूरा च्यार दिन अर तीन रातां लागी छी म्हांई ठेठ पूगबा में। अेक रात तो म्हां य्हां सुल्तानपुर रहग्या छा अर दूसरी रात बाबई में मैन रोड का ढाबा पे।

दिन उगबा कै तो घणै फ्हैली ई म्हां बाबई सूं चालबा लाग्या तो जीं ढाबा पै म्हां रात रुक्या छा ऊं ढाबा हाळा नै ई गेलो बतायो कै सड़क-सड़क जावोगा तो दस किलोमीटर ज्यादा पड़ैगो। थांतो सीध काटो। गढारां काची छै, पण बेगा पूग जावोगा अर कम चालणी पड़ैगो। सीधा सौंप जा लागोगा।

म्हां ठहरया गांव का मिनख। काची गढारा कांई हंक्या खेता में बी चाल ल्यां छा। म्हांनै बी सोचली कै सीध ई काटल्यो छै जै छै। काटली सीध। माळ ई माळ में चालता रया। दूरै-दूरै तांई खेत छा। दो-तीन गांव बी आया। यूं मानो कै ऊ गेलो अतनो सीधो पड़्यो कै दस बजतां-बजतां तो सौंप जा पूग्या। अरे वाह यार! घणा सीधा पड़्या आपण तो।

सौंप पूग्या तो होटल अर ढाबा दीखतां ई भूख बी लाग्याई। छै जे छै रोटी खाणी ई छै तो खाल्यां, लार की लार ई। फेर गेला में मिलेगी कणा न मिलै। अेक होटल पे ताती पूड़्यां कढरी छी। पूड़ी-सब्जी को भाव बी लिख रयो छो। सस्ती छी, साग-रोटी सूं। फेर कांई छो, पेट भर'र ख्वारया तो छा तो उतना पईसा में तो म्हांनै बी पेट भर'र कांई अेक-अेक, दो-दो बेसी ई खा ली मजा में। यूं मानो कै रोटी खार चालबा लाग्या तो ग्यारह बजबा हाळी छी।

:: ठिकाणो ::
50 बी, श्री कृष्णा एन्क्लेव
बख्शीस स्कूल रै लारै
देवली-अरब रोड
कोटा (राज.) 324004
मो. 9950365312

 ISSN : 2320-0995

जून को कळकळतो तावड़ो, पण चालणो तो छोई सणी। म्हां तीनूं नै ठंडा पाणी का कूलर में सूं बोतलां भरी अर चाल पड़्या।

सौंप कै बारै कढ्या तो बृजराज नै क्ही, ''सीधो गेलो तो य्हांसू बी जातोई होवैगो अर सीधा पड़ जावैंगा।''

रघुवीर नै क्ही, ''पूछल्यां कौन-कोई सूं।''

म्हे अेक बेल्डिंग की दुकान हाळा सूं पूछी तो ऊन्है क्ही, ''या गढार जा री छै, सीधा चल जाओ चोरू जा लागोगा। फेर गेला में बी पूछ लीज्यो कौन-कोई सूं। योई गेलो सीधो पड़ैगो थांकै तो।''

तीन खेतां तांई तो म्हां सरसूं का पांसा घूंदताई गया। फेर जाय'र बढिया गढार आई। गाड़ा गढार छी, चालता गया।

ताती-ताती पूड़्यां खाई छी अर ऊपर सूं तावड़ो। घबरायग्या म्हांतो, पण चालणो तो छोई सणी। पाणी पीता र्‌या अर चालता र्‌या। घंटा डोढ़ घंटा सूं बी जादा चाल्या होवांगा, जब जाय'र अेक गांव आयो।

गांव कै बारै ई प्हैली चोट का घर कै बारै ई बढिया स्यानदार लीमड़ी की छायां छी। चूंतरो बणर्‌यो छो अर चूंतरा पै खाट बिछ री छी। क्हां मिलैगो अतनो आराम। म्हां तीनूं ई जा बैठ्या खाट पै। रघुवीर नै क्ही, ''कोई लड़ न जावै।''

म्हनै क्ही, ''चोरी तो करी न र्‌या आपण। खाट पै ई तो बैठ्यां छा।''

बैठतां ई बृजराज तो लोटग्यो अर म्हां दोनूं बैठ्या र्‌या

मुस्किल सूं चार-पांच मिनट होया होवैगा कै अेक औरत पाणी को जग भर'र गिलास लेय'र आई। हाथ भर्‌या को घूंघटो ले राख्यो अर बिना बोल्यां ई म्हां तीनूं नै पाणी पिलागी। म्हे धाप'र ठंडो पाणी प्यो। पांचेक मिनट होया होवैगा कै म्हे सोची अब चालां भाया।

म्हां खड़ा ई होता कै चाय बण'र आगी। घणी मीठी बोली में दो बायरां नै म्हांसूं क्ही, ''ल्यो पांवणाओ, चाय पील्यो!''

अेक थाळी में तीन कप धर ल्याई अर चूंतरा पै धरगी। अब म्हां कांईं क्हैता। तीनूं अेक-दूसरा की आड़ी झांक्या अर अेक-अेक कप उठाल्यो चाय पीबा कारणै। म्हांईं तो सरम आबा लागगी। पण क्हां तो कांईं क्हां?

म्हे चाय पी ली।

रघुवीर नै इसारो कर्‌यो, ''अब उठां भायाओ!''

म्हां उठबा लाग्या तो भीतर सूं फैर टाटो खोल'र अेक स्याणी-सीक औरत आई। ऊन्है बी हाथ भर्‌यो को घूंघटो ले राख्यो छो अर हाथ जोड़'र म्हासूं क्ही, ''कठी सूं आबो होयो पांवणा को? रोटी बणवाल्यां छां।''

अब म्हां बोलता जींसू फ्हैली ई ऊं औरत नै क्ही, ''रोटी खाय'र ई जाज्यो, कणां कठी सूं आया छो, भूखा ई होवोगा। दफैरी बैर आयगी। अेक तो थां सरम की मारयां भूखा ई न क्है।''

अब बृजराज नै क्ही, ''मां साहब, म्हां पांवणा कोई न। म्हां तो व्हां कोटा कै पैलाड़ी सूं आयां छां। पगां-पगां चौथ माता कै बरवाड़ा जारया छां। बोलारी छै म्हांकै। आप परेसान मत होओ।''

ऊं स्याणी-सीक औरत नै क्ही, ''कोई बात कोई न म्हांका पांवणा कोई न तो। पण म्हांकै घरणै आया छो तो म्हांका पांवणा ई होया। कुणकी किस्मत छै पांवणा। म्हांको बी राम-स्याम क्है दीज्यो चौथ माता सूं अर भीतर की आड़ी झांक हेलो पाड़'र क्ही, ''कौराणी बणा लै री तूं तो रोटी-साग।

फेर म्हनैं हाथ जोड़'र क्ही, ''मां साहब, अबार सौंप सूं रोटी खाय'र ई आयां छा। व्हांसूं चाल्या जे य्हाईं आय'र रुक्या छां। भूखा होता तो खा लेता। आपनै चाय-पाणी पिलाया या कांईं कम छै के?''

अब म्हां बैग टांग'र खड़ा होग्या। व्हांसूं चालबा लाग्या तो वांनै सब नै हाथ जोड़'र म्हां विदा करया। म्हे बी हाथ जोड़'र विदा ली अर चाल धरया चौरू का गेला पे।

गेला में बातां करता ग्या म्हांका म्हांईं। साची बात छै। स्हैर में अस्यां कोई का घर कै बारै बैठ जाता तो चोर समझ लेता। चाव उठाईगिरा समझ लेता अर गांव में नीमड़ी कै नीचै कांई बैठ्या, पांवणा समझ'र आवा खातरी करबा लागग्या।

◆◆

 ISSN : 2320-0995

भवानीसिंह राठौड़ 'भावुक'

सात समदरां पार, देख्यो धोरां में थार

6 अप्रेल 2015। सांगानेर हवाई-अड्डै माथै दिनूगै सात बज्यां, म्हैं अेक ऑटोरिक्शा सूं उतरियो अर म्हारी राजकुंवर बाईसा राजां रै माथै हाथ फेर'र म्हैं म्हारी छोटी-सीक पेटी संभाळतो हवाई-अड्डै री घणी लूंठी इमारत में बड़गो अर ऑटोरिक्शा पाछो म्हारै घरां कानी व्हीर हुयगो। म्हारी दोन्यूं चिड़कल्यां म्हनैं पुगावण सारू साथै आई ही। म्हैं म्हारा जातरा रा कागज-पानड़ा संभाळतो, जेट एयरवेज रा काउंटर साम्हीं पूग्यो अर कागज अर टिगट चैक कराय'र सारा नेम-कायदा पूरा करतो-करातो, बोर्डिंग लाउंज में अेक चमाचम चिमकती बेंच माथै बैठगो।

नौ बज्यां दुबई जावण आळी प्लेन री बाटां जोवतो। टैमसर प्लेन आय'र आपरै ठाणै माथै ऊभी व्हैगी अर मांय बड़ण रो बारणो खुल्यो। म्हैं सगळा जातरुआं रै लारै सिरकतो-सिरकतो ठेठ म्हारी सीट माथै आय'र बैठग्यो।

काळजो ऊंचो-नीचो हुवै हो। गांव में गगन में उडती कागला जितरी प्लेन देखी ही, पण आ तो बींसूं घणी लांबी-चौड़ी ही। म्हैं पैली बार इणमें बैठ्यो हो, काळजो फड़क फड़क करण लाग्यो। म्हारै कनै बैठ्योड़ो डावड़ो सुजानगढ रो बामण हो। म्हैं उणनै पूछ्यो, 'थे भी पैली बार प्लेन जावो हो के?''

पड़ूत्तर मिल्यो, ''नीं सा! चौथी बार जाऊं हूं।''

म्हैं चिन्योक-सो मुळक'र म्हारो डर कीं कम करण री कोसिस करबा लाग्यो। अेक तो पैली बार प्लेन सूं अेकलो विदेस जावणो, मन में ऊंधो-सूंधो बड़तो-निकळतो डर अर दूजी कानी

:: ठिकाणो ::
167 ,श्री पाबू कोट,
गांव-पोस्ट—टापरवाड़ा
तहसील—परबतसर,
जिला-डीडवाना-कुचामन
राजस्थान
मो. 7016136759

विदेस-जातरा सूं मिलण आळा आंनद अर ग्यान रो अणूतो उछाव। म्हारी गत रो बरणन करणो खांडा री धार।

छेवट दोयेक बायां जिकी म्हारी जाण में एयर-होस्टेस ही म्हनैं जातरा रै बाबत समझावण लागी अर उणां प्लेन रो गेट बंद कर लियो हो।

म्हारी सीट बारी रै कनै ही। प्लेन रो इंजन चालू हुयो अर होळै-होळै रन-वे माथै चालण लागी। अचाणचक म्हारी सीट माथै लागेड़ी बत्ती झप झट चिमकण लागी अर बा बाई रेडिया में म्हांनै कुरसी री पेटी बांधण सारू कैवण लागी अर इंजन री जोरकी गड़गड़ाट कानड़ा रा पड़दा फाड़ण लागी।।

म्हैं दोन्यूं हाथ म्हारा कानां माथै मैल लीन्हा। प्लेन रन-वे माथै भाजण लागी अर भागतां-भागतां आगलो मूंडो थोड़ो'क ऊंचो ऊठ्यो अर 'बाय जाय... बाय जाय' करती गिगन में चढण लागी। म्हैं बारी मांय सूं जयपुर स्हैर रा घरां नै मोटा सूं छोटा, और छोटा हुंवता देख रियो हो।

अचाणक नीचै दीसण आळा घर टिमक्यां जित्ता दीखण लागग्या अर इयां लागै हो जाणै प्लेन चालै ही कोनी! बारी सूं नीचै देखूं जद लारै छूटता खेत, डूंगर अर धोळा-धोळा बादळा बतावै हा कै प्लेन उड रैयो है।

रेडिया में फेरूं बोली सुणीजी। मौसम खराब है। आप-आपरी सीट आळी पेटी फेरूं बांधण सारू घोषणा हुवै ही। म्हैं भी म्हारी पेटी बांधण लाग्यो कै चीलगाडी धचका खावण ढूकी, जाणै टूट्योड़ी सड़क माथै छकड़ो कूदै जिण भांत। म्हैं मन ई मन मां करणी रो ध्यान करण लाग्यो अर प्लेन पाछो पैल्यां जियां चालण लाग्यो।

म्हैं सागै आळां नै पूछ्यो, ''भाईजी, आ कुदकड़ा क्यूं मारै ही अबार।''

बै बोल्या, ''लूंठा बादळां में पजगी ही सा, जींसूं कूदै ही।''

म्हैं मन ई मन में सोचण लाग्यो, ''गिगन में भी गाड्यां के रेड़्यां लागै, जणै बापड़ी डामर री सड़कां पर तो लाग ही सी। आपां बापड़ा अफसरां नै झूठी गाळ्यां काढां हां।''

बारी मांय सूं अेकर फेरूं नीचै झांक्यो तो लीलोचैर समदर रो पाणी दीसै हो। थोड़ी देर पछै रेत रा टीबड़ा ई टीबड़ा दीसण लाग्या। अेकर फेरूं रेडिया माथै बाईसा री मीठी मिसरी जिसी बोली सुणीजी। बै बतावै हा कै आपां दुबई पूगण आळा हां, सीट री पेटी पाछी बांधलो। म्हैं तीसरी बार फेरूं म्हारी कुरसी री पेट्यां बांधण लाग्या।

प्लेन ज्यूं ज्यूं नीचै उतरै हो म्हारी गाबड़ में दरद होवणो सरू हुयग्यो। कानड़ा में डूजा आवण लाग्या अर माथो फाटण ढूक्यो। हवा रै दबाव सूं आ गत हुवै ही। बारी में सूं नीचै झांक्यो तो टीबड़ां रै सारै-सारै डीघी-डीघी इमारतां निजर आवण ढूकी। म्हैं दुबई रै

ऊपर च्यार चक्कर काट्या अर प्लेन आपरै टैसण माथै दौड़ण लाग्यो अर खासी ताळ दौड़्यां पछै आपरी जग्यां जाय'र थमग्यो। बारणो खुल्यां पछै म्है बारै आयो अर अेक च्यार डब्बां री रेलगाडी में बैठग्यो, जिकी म्हांनै खास इमारत (एअरपोर्ट) में लाय'र उतार दिया। म्हैं म्हारा कागज-पानड़ां माथै मुहर लगवाय'र बारै आयो। उठै म्हारा भायला सूं मिल्यो, जिको दूसरै प्लेन सूं म्हारै सूं पैली बठै पूगग्यो हो। उणरै साथै कार में बैठ'र होटल में पूग्या अर म्हारै कमरा री कूंची लेय'र कमरा में जाय'र सुस्तावण लाग्या।

म्हैं दोपारां दोय बज्यां सूं पाछला पौर रा च्यार बज्यां तांई कमरा में सुस्ताया अर सिनान-संपाड़ो करियां पछै नीचै आय'र पार्किंग मांय सूं म्हारी कार लीनी अर साव सीधा बुरज खलीफा आय पूग्या। उठै रो टिगट लेय'र गाडी ऊभी कर'र लिफ्ट में बड़ग्या, जिकी म्हांनै अेक सौ चौबीसवीं मंजिल माथै उतार दिया।

इण जग्यां भीतां री ठौड़ मोटा-मोटा काच लाग्योड़ा हा अर मोकळा मिनख न्यारा-न्यारा देसां रा उण काचां मांय सूं नीचै झांकै हा। म्हे दोन्यूं भी अेक जग्यां ऊभ'र दुबई स्हैर नै देखण लाग्या। ऊंची-ऊंची इमारतां छोटी-छोटी दीखै ही। सड़क माथै भाजती कारां मकौड़ा जितरी दीखै ही। मकानां रै दूजी कानी लीलोचैर समदर अर एक कानी जठां तांई निजर पूगै, उठा ताणी बाळू रेत रा टीबड़ा ई टीबड़ा, जिणां बिचाळै कठै-कठैई गालड़ा माथै तिल ज्यूं इक्का-दुक्का रूंखड़ा दीसै हा।

घड़ी भर उठै रुकियां पछै म्हे पाछा नीचै आया अर बुरज खलीफा रै पागती म्युजिकल वाटर फाउंटेन देखण लाग्या। रात रा नौ बजियां पाछा होटल आया। मारग में अेक रेस्टोरेंट सूं खावण सारू दक्षिण भारतीय जीमण रो डब्बो लेय लीनो। आज मारग रो थाकैलो हो। जीमण जीम्यां पछै जयपुर बाईसा सूं फोन माथै बंतळ करतां-करतां निंदरा राणी रा पालणा में झूलण लाग्यो।

दुबई री धरती माथै आज पैलै परभात री पैली किरण रै सागै म्हारी आंखड़ल्यां खुलण लागी अर म्हैं खाथो-खाथो सिनान-संपाड़ै सूं निवड़'र झटाझट होटल सूं बारै आय'र म्हारी भाड़ा री कार में सवार होय'र साव-सीधो बुर दुबई रै बीचै बणियोड़ै संग्रहालय नै दैखण सारू टिगट लियो अर कार नै पार्किंग में ऊभी कर'र साव सीधो अेक माटी री भींतां सूं बणियोड़ी लूंठी पोळ में बड़ग्या। आ पोळ आपणै जयपुर री पोळ्यां जियांकली ई ही। मांय बड़तां साव साम्हीं खजूर रै पानड़ां सूं बणियोड़ी घणी फूठरी झूंपड़ी दीसी।

म्हैं म्हारा मनस्या पूरी करण सारू उण झूंपडी नै निरखण लाग्यो, म्हारो मनड़ो अरब देसां में राजस्थानी संस्कृति हेरण ढूक्यो अर म्हारी आ लालसा पूरी हुंवती दीसी। झूंपड़ी में माटी रो बणियोड़ो आटो ओसणवा सारू कूंडो, गार रा चूल्हा, गार री केलड़ी

(मटकी रो आधो भाग), जिणसूं रोट्यां सेकण रो काम हुवै, दीसी। म्हैं अरब री संस्कृति नै ठेठ राजस्थान रा रैण-सैण सूं जोड़ण री अटकळां लगा रियो हो।

झूंपड़ी रै साम्हीं अेक छोटी-सी पाणी री बेरी, जिण माथै लाग्योड़ा भंवण पर जेवड़ो अर उणसूं बंधियोड़ो छोटोक खालड़ी रो चड़स। म्हनैं म्हारो सेवगाळो बेरो याद आयग्यो। बेरी रै अेक कानी अेक बेली अर दोय छोटी-छोटी तोपां दरसावै ही—अरब रा बादस्या री रक्षा-पद्धति नै। म्हैं होळै-होळै म्हारा भायला सूं आं सगळी चीजां रै बाबत बतळावतो आगै बधतो रैयो अर संग्रहालय रा दूजा हिस्सा में पूगग्या। इण जग्यां पुराणै जमानै रा हाट रो मंडाण मंडियोड़ो हो। नैनी-नैनी दुकानां, दर्जी री, लुहार री, पंसारी री, सुनार री। भांत-भांत री दुकानां।

म्हनैं बीसेक बरस पैली रा भकरी रा बजार री यादां ताजी करै ही। म्हैं अेक-अेक दुकान रै आगै ढबतो, ताकड़्यां अर भाटा रा बाटां नै निरखतो, धकै चालतो रियो। अेक जग्यां मदरसा रै साम्हीं मोलवी जी टाबरां नै भणावै हा। उठै ढबियो अर नैना-नैना टाबरियां रै पैरचोड़ा चांदी रा गैणां-गांठा देखण लाग्यो। गळा में चांदी रा हार, माथा पर चांदी रा बोर अर कानां में झूमरियां। सागै साग राजस्थान रा बिणजारा, कालबेलियां रो बणाव, उणीज भांत रा गैरा रंग रा कपड़ा।

म्हैं साच्याणी अरब देस में मुरधर री साकार ऊभी संस्कृति नै देखै हो अर म्हारा भायलो, जिको खुद आं बातां सूं अणजाण हो, म्हारी बातां सुण-सुण'र आपरी आंख्यां नै काचरा जितरी फाड़- फाड़'र हूंकारा भरै हो।

म्हे बातां करता-करता पूरा संग्रहालय नै देख'र पाछा बारै आया। म्हारै पेट में ऊंदरा कूदै हा। अेक काफी टेरिया में जाय बैठ्या। उठै रा रंग-ढंग देख'र म्हारो भोगनो चकरीजग्यो। बठै बैठण सारू गादी बिछायोड़ी ही। लारै लूंठा-लूंठा तकिया लागेड़ा, मूंडा आगै अेक मोटो सारो पीतळ रो आठ खूणां रो बाजोट ढळियोड़ो। उणरै कनै च्यार खजूर री बीजण्यां, बायरो घालण सारू। छात में कपड़ा रो लूंठो पंखो लटकै हो। अेक अफ्रिकन छोरो आंतरै बैठो जेवड़ी नै होळै-होळै खींच-खींच'र म्हांरै बायरो घालै हो। बाजोट रै अेक कानी लेण सूं सजायेड़ा च्यार पांचेक पीतळ रा प्याला अर अेक लूंठो होको अर कोफी सूं भरियोड़ी पीतळ री सुराही ही। दूजै कानी अेक खूणै में कोफी रा बीजां सूं भरियोड़ा न्यारा-न्यारा देसां रा नांव लिखियोड़ा बोरा।

म्हैं सुराही मांय सूं कोफी रा म्हारै खातर दोय प्यालां भर लीना अर पैली घूंट भरतां ई म्हारो मूंडो खारो जैर होयग्यो। म्हैं उण अफ्रिकन नै मीठा सारू बूझ्यो। बो दो चांदी री डब्बियां लाय'र बाजोट माथै मेल दी। उणमें च्यार-च्यार खजूर हा। म्हैं खजूर खावता-खावता कोफी रा घूंट भरण लाग्या अर निजरां सूं उण केफैटेरिया नै देखण लाग्या। अेक

कानी भाटा री घट्टी, उणरै कनै लकड़ी रा ऊंखळ अर मूसळ। आज ईण कैफेटेरिया में म्हनैं राजस्थान रा रजवाड़ां री याद आवै ही।

कोफी पीयां पछै म्हैं फोन में इंटरनेट सूं अेक पाली रो ढाबो हेर लियो अर उणनै दाळ-बाटी चूरमा रो ओडर लिखाय'र म्हारी होटल रा पता माथै पुगावण री बिणती करी अर पार्किंग सूं कार लेय'र सीधा होटल रै कमरै जाय पूग्या। घड़ीखंड पछै अेक रूमबॉय म्हारो बारै सूं मंगायोड़ो जीमण लेय'र बारणै माथै हाजर हो। विदेस री धरती माथै दाळ-बाटी चूरमा रो भोग अणूतो आणंद देय रियो हो।

जीमण जीम्यां पछै म्हे दोयेक घड़ी सुस्ताय'र होटल सूं चेक-आउट करयो अर म्हारी कार में बैठ'र आबुधाबी सारू व्हीर हुया। आबुधाबी रै मारगां डीघा-डीघा टीबड़ां रै बिचाळै काळी भंवर सड़क माथै म्हारी कार 240 रा वेग सूं सरपट भाजै ही। म्हारी निजर अेक धोरा माथै चरता ऊंटां पर पड़ी। म्हैं भायला नै गाडी ढाबण सारू कैयो अर उण टीबा रै साम्हीं कार ढाब दीनी। म्हैं नीचै उतरयो अर ऊंटां रा गुवाळ कनै पूग्यो। बीं सूं बतळावण सारू म्हैं टूटी-फूटी अंगरेजी झाड़ण लाग्यो, पण बीं रै अेक ई बात पल्लै नीं पड़ी। उणरै कनै पाणी री छागळ ही अर म्हैं सैनां सूं उणनै पाणी पावण सारू कैयो। जद उणरै कीं समझ आई अर म्हनैं राजी-राजी आपरी छागळ सूं पाणी पायो। ठंडोटीप छागळ रो पाणी, काळजो ठंडो कर दीनो अर म्हे पाछा कार में बैठ'र साव सीधा आबुधाबी री होटल में पूग्या अर चेकइन रै पछै कमरा में जाय'र सुस्तावण लाग्या अर साथै ल्यायोड़ा फळ-फ्रूट खाय'र आप-आपरै कमरै री बत्ती बुझाय'र टीवी देखता-देखता नींद रै समदरिया में तिरण लाग्या।

अरब री धरा माथै तीजै दिन रो सूरज ऊग्यो। म्हे दोन्यूं भायला सिनान-संपाड़ो कर'र होटल रा रेस्टोरेंट सूं कलेवो मंगाय'र कलेवो करता थकां आज रै दिन, किण-किण जग्यां जावणो है, इण सारू माथापच्ची करण लाग्या अर छेवट दो जग्यां देखण रो मत्तो कीनो अर बारै आय'र कमरां रै ताळो-कूंची करया अर पार्किंग सूं कार बारै काढी। आबुधाबी री सड़कां नापता, यस वाटर वर्ल्ड में पूग्या। उठै टिगट लेय'र लॉकर-रूम में म्हारा थैला मेल्या अर न्हाण आळा बागा कर'र वाटर वर्ल्ड री तिसळणी पाणी री पाइपां में तिसळण लाग्या, पण बठै फिरणिया लोग-लुगायां री सांगो देख'र म्हारो मन ऊबण लाग्यो। म्हे कीं न्हाया, कीं नीं नहाया अर दोन्यूं जणा अेक घड़ी में ईज बारै आयग्या अर कार रो मूंडो शेख जायद मेजीद कानी करयो। बठै जाय'र घड़ीखंड पछै पाछा होटल सारू व्हीर हुया। आबुधाबी में म्हारै देखण सारू कीं नी हो।

होटल में आय'र दिन ढळतां ताणी सुस्ताया अर होटल रो भाड़ो देय'र अेकर फेरूं कार री सीट माथै आय पूग्या। अबै म्हनै म्हारा हेताळू, काळजा री कौर, मायड़ भोम रा

बासी रामसिंघ जी राठौड़ सूं मिलणो हो। वै घणी देर सूं फोन री घंटी बजावै हा। म्हे कार रो मूंडो साव दिखणादो कर लियो अर ओमान बॉर्डर माथै बसियोड़ा रासलखेमा सारू व्हीर हुया। मारग में शारजहा, अल ईन स्हैरां री सड़कां नापता, सिंझ्या रा छह बज्यां रासलखेमा री कोर्निश रोड माथै बणियोड़ी होटल मेंग्रोव में जाय पूग्या। कार पार्किंग में ऊभी कर'र रिसेप्शन में आया। बठै जद नांव लिखाण लाग्यो तो लिखणियो बोल्यो, ''हुकम, आप पैला राजपूत सिरदार हो, जिणां नै म्हैं इण होटल में देख रियो हूं।''

जद में उणां रो नांव, गांव ठिकाणो पूछ्यो तो वै भी मारवाड़ सूं अजमेर रा रैवासी हा। हिवड़ै में घणो हरख उमड़्यो परदेस में मिजमानी करता आपरा वंश रा भाई सूं मिल'र अर म्हैं झट पाटियो उठाय'र उणरी कुरसी कनै लपक्यो अर पट म्हारी दोन्यूं बांवां चौड़ी कर दी। अजयपाल सा (रिशेप्शनिस्ट) ऊभा होय'र म्हांसूं मिल्या।

म्हे दोन्यूं अेक-दूजा सूं अणजाण पण हिवड़ै में उमड़तो अपणैस। म्हे पांच मिनट तांई इयां ईज ऊभा रिया। म्हारा भायला री बोली सुण'र दोनुवां नै होस बापरयो। तीन-च्यार युरोपियन म्हांनै देखै हा। वै भी आपरै कमरां री कूंच्यां सारू ऊभा हा। जद में म्हारी कागदी कारवाई पूरी कर'र म्हारै कमरै में आयग्यो। अजयपाल सा रो हेत म्हनैं गाफिल कर दियो हो। थोड़ीक टैम पछै इंटरकोम सूं फेरूं अजयपाल सा सूं बंतळ करी अर राजस्थानी चाय री मांग करी।

थोड़ी देर में रूमबॉय चाय मेल'र गियो परो। चाय पीयां पछै म्हैं रामसिंघजी नै फोन माथै म्हारी होटल रो ठिकाणो बतायो अर उणां री बाट जोवण लाग्यो। आठेक बज्यां रामसिंघजी आपरा अेक साथी रै सागै होटल पूग्या। थोड़ी टैम तांई रिसेप्शन हॉल में बंतळ कर'र म्हैं उणां रै सागै व्हीर हुयो अर जठै बै रैवता हा, उण मकान में गियो। दोन्यूं भाई पैलपोत अेक-दूजै सूं मिल्या हा। सोशल मीडिया पर रोजीना बंतळ करता ईज हा।

रामसिंघजी लापसी बणाई अर म्हैं रायतो बणायो। म्हनैं इयां लागै हो जाणै म्हैं जोधपुर में जीमण बणा रिया हां। जीम्यां पछै रामसिंघजी घणी जिद करी रात रुकण सारू, पण म्हारो भायलो होटल में अेकलो हो, जिणसूं म्हनैं पाछो होटल आवणो ईज पड़्यो। मारग में रामसिंघजी अेक बांगलादेशी री दुकान सूं टाबरां सारू काजू किसमिस, लोंग-इलायची मुलाया अर खजूरां रा पॉकेट अर अेक पॉकेट तोहफा रो माडाणी म्हारी कार में मेल दिया अर म्हनैं होटल तांई पुगायग्या।

म्हैं सारा पॉकेट लेय'र कमरै में पूग्यो अर सारी बातां विगतवार म्हारा भायला नै बतळावण लाग्यो। बंतळ करतां-करतां कद म्हारी पलकां बंद होयगी, कीं ठा नीं पड़्यो अर दिनूगै बाईसा राज रै फोन री घंटी सुण'र म्हैं जाग्यो। म्हारो भायलो म्हारै खातर अरेबियन कोफी बणावै हो।

होटल बिन माजिद मेंग्रोव री आठवी मंजल रै कमरै री बारी सूं सूरज भगवान री ऊगती किरणां रै समचै म्हारी आंख खुली। रात रा जीमण री यादां करतो थको म्हैं बिछावणां सूं बारै आयो अर लिविंग-रूम में बैठ्या म्हारा भायला सूं बंतळ करण लाग्यो अर आज किण-किण जग्यां जावणो है, उणरो मंडाण मांडण लाग्या।

छेवट रासलखेमा रै नेड़ै उज्योड़ोड़ो अेक गांव देखण रो मतो कीनो। औ गांव अेक भूत रा डर सूं उजड़ग्यो हो। सिनान-संपाडा अर कलेवा सूं निवड़'र म्हैं चेक-आऊट सारू म्हारो सामान लेय'र नीचै रिसेप्शन माथै ऊभा हा। अधघड़ी तांई अजयपाल सा सूं घरबिध री बंतळ करनै म्हारी कार में पूग्या अर व्हीर हुया उण उजड़्योड़ै गांव रै मारगां। च्यारेक कोस चाल्यां पछै अेक जग्यां रुक'र गांव रो मारग पूछ्यो अर कच्चै मारगां चालण लाग्या अर ठिकाणा माथै पूगग्या।

गांव रै च्यारूंमेर ऊंची-ऊंची इमारतां अर बिचाळै-सीक टूट्या-फूट्या, गार री ईंटां सूं बण्योड़ा घर। म्हैं अेक-अेक घर में जाय'र शोध करण लाग्यो। ईंटां रा गारा में समदर री रेत, उणमें पड़ियोड़ा शंख अर सीप्यां रा टुकड़ा। पुराणा जमाना में ढूंढाड़ रा घरां जैड़ा घर, चौड़ी-चौड़ी भींतां। आंगळ्यां सूं मांडेड़ा मांडणा। भींतां में छोटा-छोटा आळा, लकड़ी रा पाट अर उण माथै बिछायोड़ा खजूर रा पानड़ा अर सबसूं ऊपर गारा री छात न्हाख्योड़ी।

आं घरां नै निरखतो थको म्हैं ढूंढाड़ रा जूना घरां सूं मिलाण करै हो। म्हैं अचंभित हो, सात समदर पार अरब भोम में राजस्थान जैड़ी जूनी वास्तुकला नै देख'र।

हरेक घर रै चौभीतो बणियोड़ो, मांयनै दो-तीन साळां, बीच में चौक। घड़ीखंड तांई म्हैं उण ढूंढा में शोध करतो रियो अर इंटरनेट माथै इण बिगत जाणकारी लेवतो रियो। उण मुजब इण गांव रा बासिंदा रो खास काम समदर सूं मोती निकाळण रो हो। अेक भूत रा डर सूं गांव रा लोग इण जग्यां नै छोड'र सारै ई बण्योड़ी ऊंची-ऊंची इमारतां में रैवण लाग्या अर औ गांव उजाड़ व्हैग्यो। इणीज गांव रो अेक बासिंदो यूएई गोरमिंट में मंत्री हो।

म्हैं उठै सूं व्हीर हुया अर फर्राटा भरती कार सूं दिन ढळतां दुबई आय पूग्या। दोयेक घडी सुस्तायां पछै सिंझ्या रा दुबई रो मछलीघर देखण नै गिया, जठै भांत-भांत री मछल्यां काच री पेट्यां में किलोळां करै ही। घूमतां-फिरतां म्हारी निजर अेक भींत माथै लाग्योड़ा अेक जूना नक्सा माथै पड़ी। औ कपड़ा पर मांडेड़ो दुबई रो सबसूं जूनो नक्सो हो। म्हारी जाण मे इस्लाम सूं पैली रा बखत रो।

म्हैं इणमें फेरूं शोध करण ढूक्यो अर इणनै समझण सारू माथापच्ची करण लाग्यो। इणमें मंडियोड़ा चांद-सूरज, कमल रा फूल अर गाय सूं अंदाज लगायो कै इण नक्सा नै मंडावण आळो कोई हिंदू राजा हो, जिणरो इण भोम माथै राजपाट हो।

मछलीघर सूं बारै निकळतां पाण ई म्हारै कनै फोन आवण लाग्या। उण भाईसैणां रा जिका उठै रैवता हा अर म्हारै सूं मिलणो चावै हा। म्हैं उणां नै म्हारी होटल रो पतो बतायो अर साव सीधो होटल पाछो आय'र उणां री बाट जोवण लाग्यो। रात रा आठेक बज्यां, तीन जणा रिसेप्शन पर आय'र म्हनैं फोन करयो। म्हैं उठै ईज ऊभो हो, पण आपस में मिलेड़ा नीं हा, इणसूं पिछाण नीं सक्या।

अै तीनूं भवानीसिंघ भाटी तापु ओसियां रा, प्रेमसिंघ ईन्दा अर नरपत सिंघ राठौड़ हा। तीनूं सूं समाज रा ग्रुपां मांयनै घणी बंतळ करता, पण आज आम्हीं-साम्हीं सांप्रत मिलणो हिवड़ै में अणूतो ई उछाव भरै हो। म्हे सगळा रेस्टोरेंट में बैठ'र घणी ताळ तांई हथाई करी अर सुख-दुख री बंतळ करी। रात रा दसेक बज्यां जीमण सारू उणां री मनवार करी, पण बै सगळा जीम-जूठ'र ईज आया हा।

परदेस में आपरा भायां सूं मिलणो अणूतो ई आणंद दायक हो। छेवट बिछड़ण री बेळा आयगी अर म्हांनै बिछड़णो पड़्यो। जावता-जावता भवानीसिंघ भाटी सागै ल्यायेड़ो तोहफां रो डब्बो म्हारै निजरां करयो। म्हैं घणो ई नट्यो, पण बै नीं मान्या अर उणां रो मान राखण सारू म्हनैं झेलणो ईज पड़्यो। आखिर में जै माताजी री कर'र उणां नै बिदा करया अर म्हैं कमरा में आय'र पाछो भारत आवण री त्यारी करण लाग्यो।

दिनूगै च्यार बज्यां रै प्लेन सूं आवणो हो। इण सारू दोय बज्यां म्हैं होटल छोड'र हवाई-अड्डै पूग लिया अर कार जमा कराई।

कागद-पतरां री जांच-पड़ताळ कराय'र प्लेन में आय बैठ्यो। दिनूगै सात बज्यां सांगानेर हवाई अड्डै पूगग्या। ऑटो कर'र म्हैं म्हारै मकान माथै आयो अर म्हारो भायलो आपरै ठिकाणै व्हीर हुयो।

घरां आयां पछै म्हैं म्हारी चिड़कल्यां नै इण यात्रा बाबत बतावण लाग्यो। घड़ी-घड़ी म्हनैं दुबई मे मिलेड़ा हेत अर अपणायत री यादां आवण लागी। म्हैं साच्याणी अरब देस में मायड़भौम राजस्थान रै मारवाड़ अर ढूंढाड़ रा दरसण कर'र आयो हो।

◆◆

राजस्थली, जुलाई-दिसम्बर, 2025 (अंक : 168-169) रजि. नं. 31319/77 ISSN : 2320-0995

राजस्थली रै पचासवैं बरस में पूगणै रै मंगळ टांणै 'घर-घर राजस्थानी' अभियान रै तैत राजस्थानी जन जागरण अभियान रै मौकै निकाळीजी रैली अर प्रभात फेरी रो दरसाव।

महावीर माली, मरुभूमि शोध संस्थान
(राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़)
खातर महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूंगरगढ़ में छपी

राजस्थली लेन-देन सारु :
खाता नांव : RAJASTHALI
बैंक : बैंक ऑफ इंडिया, श्रीडूँगरगढ़
खाता सं. : 746210110001995
IFSC : BKID 0007462

Website : http://rbhpsdungargarh.com